



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. -188]
No. 188]

नई दिल्ली, बुधवार, जुलाई 7, 2010/आषाढ़ 16, 1932

NEW DELHI, WEDNESDAY, JULY 7, 2010/ASADHA 16, 1932

बाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(बाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 7 जुलाई, 2010

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित कुमेरिन के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच—अंतिम जांच परिणाम।

फा. सं. 14/17/2009-डीजीएडी.—यतः निर्दिष्ट प्राधिकारी ने समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, पाटनरोधी शुल्क का निर्धारण एवं वसूली तथा क्षति निर्धारण) नियम (जिसे एतदपश्चात् नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए;

पृष्ठभूमि

1. यतः निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात् प्राधिकारी भी कहा गया है) को समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (यांत्रिक वस्तुओं का अभिज्ञान, पाटनरोधी शुल्क का निर्धारण एवं वसूली तथा क्षति निर्धारण) नियम (जिसे एतदपश्चात् नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए मै. दी. पी. एम सोलीसिटर्स एंड कंसलटेंट्स, नई दिल्ली (जिसे एतदपश्चात् 'अन्वेषक' कहा गया है) को जरिए मै. एटलस फाइन कैमिकल्स प्रा. लि., नासिक, महाराष्ट्र से एक आवेदन प्राप्त हुआ जिसमें चीन जन. गण. (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल की या वहाँ से निर्यातित कुमेरिन (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आवेद लगाया गया था और उन्होंने संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने हेतु पाटनरोधी जांच शुरू करने का अनुरोध किया था।

2. और यतः प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य की पर्याप्तता और श्योत्थयता के शरे में जांच करने के बाद उसके आधार पर नियमावली के नियम 6(1) के अनुसार संबद्ध देश के मूल की या वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए 10 जुलाई, 2009 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया ताकि आरोपित पाटन की मौजूदगी, उसकी मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि की सिफारिश की जा सके जिसे यदि वसूल किया जाता है तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी।

3. और यह: निर्दिष्ट प्राधिकारी ने अधिनियम और नियमावली को ध्यान में रखते हुए 29 जनवरी, 2010 के प्रारंभिक जांच परिणाम के तहत चीन जन.गण. के मूल के या वहां से निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (1975 का 51) के अध्याय 29 (कार्बनिक रसायन) के अंतर्गत आने वाले कुमेरिन (जिसे एतदपश्चात संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच शुरू की और अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की तथा संबद्ध वस्तु पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क 23 मार्च, 2010 की सी. शु. अधिसूचना सं. 38/2010-सी. शु. के तहत लगाया गया था।

क. प्रक्रिया:

4. निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है।

- (i) प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 5 के उप नियम (5) के अनुसार जांच की शुरूआत से पूर्व आवेदक द्वारा संबद्ध वस्तु के पाटन का आरोप लगाते हुए आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत स्थित संबद्ध देश के दूतावास/व्यापार प्रतिनिधि को अधिसूचित किया।
- (ii) प्राधिकारी ने नियम 6 के अनुसार जांच की शुरूआत के बारे में सूचना देते हुए भारत के संबद्ध देश के दूतावास/व्यापार प्रतिनिधि को 10 जुलाई, 2009 की जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां इस अनुरोध के साथ भेजी कि वे निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए संबद्ध देश के निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह दें। निर्यातकों/उत्पादकों को भेजे गए पत्र और प्रश्नावली तथा आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की एक प्रति आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों के नाम और पतों के साथ उनके पास भेजी गई थी।
- (iii) प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार संबद्ध देश के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को निर्यातक प्रश्नावली के साथ-साथ आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण सहित 10 जुलाई, 2009 की जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां भेजी और उनसे यह अनुरोध किया कि वे जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना के 40 (चालीस) दिनों के भीतर संगत सूचना उपलब्ध कराएं और अपने विचारों से लिखित में अवगत कराएं।
- (iv) प्राधिकारी ने आयातक प्रश्नावली के साथ-साथ 10 जुलाई, 2009 की जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां ज्ञात आयातकों और आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार घरेलू उद्योग को भी भेजी और उनसे यह अनुरोध किया कि वे जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना के 40 (चालीस) दिनों के भीतर संगत सूचना उपलब्ध कराएं और अपने विचारों से लिखित में अवगत कराएं।

(V) आवेदक ने प्राधिकारी से यह अनुरोध किया कि वह वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश का व्यवहार प्रदान करें। प्राधिकारी ने चीन जन.गण. के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को इस आशय की सूचना दी कि उसका प्रस्ताव यथासंशोधित नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा (7) व (8) के महेनजर आवेदक के दावे की जांच करने का है। अतः चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के संबंधित निर्यातकों/उत्पादकों को यह सलाह दी गई थी कि वे पैरा 8 के उप पैरा 3 में किए गए उल्लेखानुसार आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करें ताकि प्राधिकारी इस बात पर विचार कर सके कि क्या बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार उन सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को प्रदान किया जाना चाहिए जो यह प्रदर्शित कर सकते हैं कि वे अपने मामले में प्रचलित बाजारी स्थितियों को पूरा करते हैं।

(VI) प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियम के नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देश के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों से संगत सूचना मंगाने के लिए प्रश्नावलियां भेजी थीं।

1. तियानजिन सिटी नं. 3, कैमिकल रीजेंट फैक्ट्री, जुझुआंगजीसियांग, डोंगली डिस्ट्रिक्ट, तियानजिन- 300240
2. नानजिंग हुआफा कैमिकल कंपनी लि., मीसोन, झाँगझूआमेनवाई, जियांगनिंग काउंटी नानजिंग सिटी, जियांगसू - 210039
3. चांगझू नं.2 कैमिकल प्लांट, सोला, चांगकी रोड, कीसुआन चांगझू सिटी, जियांगसू-213003
4. डूमेन काउंटी बाइसिफा कैमिकल फैक्ट्री क. लि., डूमेन टाउन, डूमेन काउंटी, झूहाई सिटी गुआंगडोंग-519

(VII). जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना के उत्तर में चीन के निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों ने जवाब दिया है:

- (1) यिंघाई (कांगझू) एरोमा कैमिकल कं. लि.
- (2) मै.जियानगिन बाईहुई फ्रेगरेंस कं. लि.

(VIII) नियम 6-(4) के अनुसार आवश्यक सूचना हेतु संबद्ध वस्तु के ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ता एसोसिएशनों को प्रश्नावली भेजी गई थी। उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में किसी आयातक/हितबद्ध पक्षकार ने अपने अनुरोध दायर नहीं किए हैं।

(IX) 29 जनवरी, 2010 को प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए गए थे और उसकी प्रति समर्त हितबद्ध पक्षकारों को उनकी टिप्पणियों के लिए भेजी गई थी। इसी के साथ-साथ उसकी एक प्रति सभी संबंधितों के सूचनार्थ वैबसाइट पर भी उपलब्ध कराई गई थी। तथापि, निर्धारित समय सीमा के भीतर किसी हितबद्ध पक्षकार से कोई उत्तर प्रस्तुत नहीं

हुआ था। प्रारंभिक जांच परिणाम और सार्वजनिक सुनवाई के बाद मैं फ्रेगरेंस एंड फ्लेवर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया से एक पत्र प्राप्त हुआ था जिसमें उन्होंने यह उल्लेख किया था कि आवेदक ने उनके नाम का उल्लेख ज्ञात एसोसिएशन के रूप में नहीं किया गया है और इस प्रकार वे तथा एसोसिएशन के सदस्य जो आयातक और प्रयोक्ता भी हैं, अपने विचार देने की स्थिति में नहीं हैं क्योंकि उन्हें सार्वजनिक सूचना की प्रति नहीं मिली है। उन्होंने यह भी बताया कि एसोसिएशन के सदस्यों को आयातक प्रश्नावली प्राप्त नहीं हुई है और वे अपने विचार देने की स्थिति में नहीं हैं। इस मामले की जांच की गई है और यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी ने जांच की शुरुआत के चरण पर प्रश्नावली का उत्तर मांगने हेतु आवेदन में सूचीबद्ध आयातकों सहित ज्ञात पक्षकारों को पत्र लिखा था। इसके अलावा, जांच की शुरुआत और प्रारंभिक जांच परिणाम भारत के राजपत्र में अधिसूचित किए गए थे और उनकी जानकारी सभी हितबद्ध पक्षकारों को दी गई थी तथा उनकी एक प्रति समर्त हितबद्ध पक्षकारों के सूचनार्थ वैबसाइट पर डाली गई थी। तथापि, किसी भी आयातक अथवा उपभोक्ता ने जांच की शुरुआत अथवा प्रारंभिक जांच परिणाम और सार्वजनिक सुनवाई के चरण पर प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया। अतः प्राधिकारी वर्तमान जांच का उत्तर देने में असमर्थ था और वर्तमान जांच में भागीदारी न करने के कारणों के बारे में एसोसिएशन के तर्क को स्वीकार करने की स्थिति में नहीं है। इससे संबंधित कानूनी स्थिति होने के बावजूद भी प्राधिकारी ने एसोसिएशन के अनुरोध पर विचार किया तथा आयातक प्रश्नावली के प्रपत्र में और ढंग से सूचना प्रदान करने के लिए कहते हुए एसोसिएशन तथा आयातकों को पत्र लिखा। यह नोट किया जाता है कि एक आयातक को छोड़कर किसी भी आयातक ने प्राधिकारी के पत्र का उत्तर नहीं दिया है। यह नोट किया जाता है कि मैं. कर्नाटक एरोमेटिक्स से उत्तर प्राप्त हुआ है जो अत्यंत त्रुटिपूर्ण है। कंपनी द्वारा आयातक प्रश्नावली में निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से कोई सूचना नहीं दी गई है। आयातक ने मैं. जियानगिन बाईहुई फ्रेगरेंस कंपनी लि. से 4 आयात सौदों के ही ब्यौरे उपलब्ध करवाए जिनकी प्राधिकारी ने जांच की है। किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार से निर्धारित समय सीमा के भीतर कोई उत्तर नहीं मिला है। चूंकि पाटनरोधी जांचें समयबद्ध होती हैं इसलिए उपर्युक्त एसोसिएशन से समय विस्तार का और कोई अनुरोध स्वीकार नहीं किया गया था।

(x) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से पिछले तीन वर्षों और जांच अवधि के दौरान भारत में हुए संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरों की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया था। डी जी सी आई एंड एस से प्राप्त सूचना का विश्लेषण किया गया था और आई बी आई एस (द्वितीयक स्रोत) से प्राप्त सूचना के साथ उसकी तुलना की गई थी। विस्तृत जांच के बाद आई बी आई एस की सूचना पर गौर करने का निर्णय लिया गया था क्योंकि उसमें संबद्ध वस्तु की अधिक मात्रा सूचित की गई थी।

(xi) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखा और उसे नियम 6(7) के अनुसार हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षणार्थ खुला रखा। अगोपनीय आवेदन की एक प्रति भी अनुरोध करने पर अन्य हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराई गई थी।

- (xii) प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना का संभव सीमा तक सत्यापन किया जिससे हुई क्षति की जांच की जा सके और सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों तथा आवेदकों द्वारा प्रस्तुत सूचनन के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की ईष्टतम उत्पादन लागत और उसे बनाने तथा बेचने की लागत निकाली जा सके ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कमतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।
- (xiii) नियम 6(6) के अनुसार प्राधिकारी ने 10 मार्च, 2010 को आयोजित सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार मौखिक रूप से व्यक्त करने के लिए सभी हितबद्ध पक्षकारों को एक अवसर भी प्रदान किया। सार्वजनिक सुनवाई में जिन हितबद्ध पक्षकारों ने अपने विचार व्यक्त किए थे उनसे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों के लिखित अनुरोध हर हालत में 17 मार्च, 2010 तक दायर करने और अपने उत्तर हर हालत में 24 मार्च, 2010 तक प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था।
- (xiv) इस अंतिम जांच परिणाम में *** चिन्ह हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना और पाटनरोधी नियमावली के अनुसार प्राधिकारी द्वारा गोपनीय मानी गई सूचना को दर्शाता है।
- (xv) वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ जांच अवधि 1 जनवरी, 2008 से 31 दिसंबर, 2008 (12 माह) के दौरान की गई थी। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच में 2005-06, 2006-07, 2007-08, और जांच अवधि शामिल रही थी।
- (xvi) प्राधिकारी ने पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में जांच के लिए संगत मानी गई सूचना प्रस्तुत करने हेतु विचाराधीन उत्पाद के आयातकों/औद्योगिक प्रयोक्ताओं को अवसर प्रदान किया। उपर्युक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसार इन जांच परिणामों के लिए विचारित आवश्यक तथ्यों/आधार का प्रकटन 21 जून, 2010 को ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष किया गया था और उस पर प्राप्त टिप्पणियों पर भी इन जांच परिणामों में विधिवत विचार किया गया है।
- (xvii) इस मामले में प्राधिकारी ने बिक्री कीमत और लागत से संबंधित आंकड़ों को गोपनीय माना है क्योंकि उनके प्रकटन से अन्य हितबद्ध पक्षकारों को अनुचित प्रतिस्पर्धी लाभ प्राप्त हो सकता है। घरेलू उद्योग की मात्रा से संबंधित आंकड़ों को गोपनीय नहीं माना गया है।
- (xviii) जहां कहीं किसी हितबद्ध पक्षकार ने वर्तमान जांच की कार्यवाही के दौरान आवश्यक सूचना जुटाने से मना किया है अथवा उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया है अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डाली है वहां प्राधिकारी ने "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर ये जांच परिणाम दर्ज किए हैं।

ख. विचाराधीन उत्पाद

5. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद सभी किस्मों के कुमेरिन (जिन्हें एतद्पश्चात "संबद्ध वस्तु" कहा गया है) हैं। कुमेरिन (रासायनिक सूत्र C9H6 O2) रसायनों के लेक्टोन परिवार से संबद्ध रखता है। यह एक सुर्गंधित रसायन है, जो सफेद क्रिस्टल, फ्लेक या प्लाउडर रूप में हो सकता है। इसमें ताजी काटी हुई फूस की विशेष महक होती है जो बनीला के समान मिश्रित किस्म की सुगन्ध होती है। कुमेरिन का उपयोग

सुगंधित यौगिकों को तैयार करने में किया जाता है और इन सुगंधित यौगिकों का प्रयोग साबुन, डिटर्जंट, सौंदर्य प्रसाधन, अगरबत्तियों और अन्य सुगन्धों के उत्पादन में किया जाता है। यह खुशनुमा सुगन्ध देता है और अनेक अन्य घरेलू और आद्योगिक उत्पादों की अवाञ्छित दुर्गन्ध को रोकता है। कुमेरिन जो मूल रूप से टॉका के बीजों से प्राप्त एक प्राकृतिक उत्पाद है, को अब कृत्रिम रूप से भी उत्पादित किया जाता है। इसे दो कृत्रिम प्रक्रियाओं से प्राप्त किया जा सकता है अर्थात् (i) सालीसाइलाडेहाइड प्राप्त करने के लिए फेनोल से शुरू होकर तत्पश्चात् परकिने की प्रतिक्रिया और (ii) ऑर्थो-क्रेसोल से शुरू होने वाली प्रक्रिया, जिसे रेस्विंग पद्धति भी कहा जाता है तथा जिसमें ऑर्थो-क्रेसोल से सालीसाइलाडेहाइड बनाया जाता है और तत्पश्चात् उसे कुमेरिन में परिवर्तित किया जाता है। दोनों ही प्रक्रियाओं में सालीसाइलाडेहाइड और एसेटिन एनहाइड्राइड उत्प्रेरक के रूप में ऐसेटिक अम्ल में सोडियम एसिटेट की मौजूदगी में प्रतिक्रिया करते हैं और अपरिष्कृत कुमेरिन को आगे अनेक डिटीलेशन के द्वारा एसिटिक एसिड से अलग किया जाता है। अपरिष्कृत कुमेरिन को आगे अनेक डिटीलेशन के द्वारा परिशुद्ध किया जाता है और फिर मेथीनोल में क्रिस्टलीकृत उत्पाद को अपकेन्द्रीय प्रक्रिया द्वारा अलग किया जाता है और सुखाया जाता है। कुमेरिन का प्रमुख भौतिक विनिर्देशन उसकी शुद्धता होती है, जिसके लिए गलनांक बिन्दु संकेतक होता है।

6. इस उत्पाद को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 29 के अंतर्गत सीमाशुल्क उपशीर्ष सं. 2932.21.00 के तहत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि, सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और और इस जांच के दायरे पर बाध्यकारी नहीं है।

7. किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने कार्रवाई के किसी चरण पर विचाराधीन उत्पाद के बारे में कोई अनुरोध नहीं किया है। अतः प्राधिकारी प्रारंभिक जांच परिणामों में विचारित और उपर्युक्त पैरा 5 में उल्लिखित विचाराधीन उत्पाद की पुष्टि करते हैं।

ग समान वस्तु

8. समान वस्तु के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) में निम्नानुसार प्रावधान है:

"समान वस्तु" का अर्थ एक ऐसी वस्तु है जो भारत में पाटन के लिए जांच के अधीन वस्तु के समान हो या प्रत्येक दृष्टि से उसके जैसी हो अथवा ऐसी वस्तु के अभाव में कोई अन्य ऐसी वस्तु जो यद्यपि प्रत्येक दृष्टि से समान न हो तब भी उसमें जांचाधीन वस्तु से अत्यधिक मिलती-जुलती विशेषताएं हो;

9. आवेदक ने दावा किया है कि आवेदक के उत्पाद और संबद्ध देश से निर्यातित संबद्ध वस्तु के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है और ये भौतिक और रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्य और उपयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत निर्धारण, वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं की दृष्टि से तुलनीय हैं और आवेदक द्वारा उत्पादित तथा संबद्ध देश से निर्यातित संबद्ध उत्पाद के बीच कोई खास अंतर नहीं है और ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से

प्रतिस्थापनीय हैं। वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं को पाटनरोधी नियमावली के अनुसार संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तुओं के समान वस्तु माना जा रहा है।

10. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के बारे में किसी हितबद्ध पक्षकार ने कोई तर्क नहीं दिया है। अतः प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों पर विधिवत विचार करने के बाद यह माना है कि वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु पाटनरोधी नियमानुसार संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु के समान वस्तु है।

घ. घरेलू उद्योग और उसका आधार

11. यह आवेदन घरेलू उद्योग के रूप में मै. एटलस फाइन कैमिकल्स प्रा.लि. द्वारा दायर किया गया है। आवेदक के अलावा भारत में संबद्ध वस्तु के दो अन्य उत्पादक थे जिन्होंने भी अपना वाणिज्यिक उत्पादन बंद किया है। तदनुसार आवेदक का उत्पादन जांच अवधि के दौरान भारतीय उत्पादन का 100% बनता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने इस दावे का खंडन नहीं किया है।

12. प्राधिकारी मानते हैं कि मै. एटलस फाइन कैमिकल्स प्रा.लि. भारत में समान वस्तु का एकमात्र उत्पादक है और वह पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर "घरेलू उद्योग" है। प्राधिकारी आगे यह मानते हैं कि आवेदन पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) और नियम 5(3) की अपेक्षाओं को पूरा करता है।

उ. अन्य अनुरोध और उठाए गए मुद्दे:

उ.1 घरेलू उद्योग के अनुरोध

13. सुनवाई के बाद घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :

(1) चीन, जन.गण. से संबद्ध वस्तु के पाटन की पुरानी परंपरा रही है। वस्तुतः अमरीका में पाटन के कारण संयंत्र बंद करने पड़े और यूरोपीय संघ में अब संयंत्र बंद किए जाने की संभावना है।

(2) चीन के उत्पादकों ने साक्ष्य के आधार पर यह सिद्ध नहीं किया है कि प्राधिकारी उन्हें बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान कर सकते हैं। इसकी बजाए उनके उत्तर में यह बताया गया है कि उनके खाते लेखा परीक्षित नहीं हैं। इसके अलावा, प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक जांच परिणामों में मांगी गई सूचना नियांतकों ने नहीं दी है। इसके बजाए चीन के उत्पादकों ने राज्य के साथ अपने संबंध का खुलासा न कर प्राधिकारी को गुमराह किया है। अतः इस संबंध में प्रारंभिक जांच परिणाम यथावत रहने चाहिए।

(3) प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन (3.46% और 9.23%) काफी कम हैं।

(4) चीन के निर्यातकों द्वारा किए गए निर्यात कीमत के दावों का समर्थन भारतीय सीमाशुल्क को सूचित कीमतों के साथ नहीं किया गया है। अतः जब तक निर्यात कीमत के दावों का समर्थन भारतीय सीमाशुल्क के आंकड़ों से नहीं होता है तब तक निर्यात कीमत का दावा पूर्णतः अस्वीकार्य रहता है।

(5) वैट बीजक एकमात्र ऐसा प्रामाणिक दस्तावेज है जिसके आधार पर निर्यातक उस कीमत की पुष्टि कर सकता है जिस कीमत पर वस्तु का निर्यात किया गया था। तथापि, चीन के सीमाशुल्क को प्रस्तुत बीजक वैट बीजक है और ने कि भारतीय सीमाशुल्क को प्रस्तुत बीजक।

(6) भारतीय सीमाशुल्क को प्रस्तुत बीजक वाणिज्यिक बीजक है तथापि, भारतीय सीमाशुल्क को प्रस्तुत वाणिज्यिक बीजक चीन के सीमाशुल्क को प्रस्तुत नहीं किया गया है। इस प्रकार वाणिज्यिक बीजक और वैट बीजक की पुष्टि कराए जाने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।

(7) इस मामले में सीमित सौदों को देखते हुए निर्यातक द्वारा किए गए इन दावों को प्रमाणित करना महत्वपूर्ण है कि आई. बी. आई एस और डी. जी. सी. आई. एंड एस द्वारा संकलित और एकीकृत आंकड़े व्यावहारिक हैं। निर्यातक द्वारा अब दावा की गई कीमतों में और सीमाशुल्क को सूचित कीमतों में कोई खास अंतर होने की स्थिति में सीमाशुल्क को सूचित कीमतों पर ही निर्यात कीमतों के निर्धारण हेतु भरोसा किया जा सकता है।

(8) निर्यातक के दावों और भारतीय सीमाशुल्क की रिपोर्टों में अंतर के मुद्दे को पर्याप्त ढंग से पिछली कई जांचों में निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष लाया गया है। ऐसे मामलों में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अपनाया गया सतत दृष्टिकोण यह रहा है कि भारतीय सीमाशुल्क को घोषित कीमतों स्वीकार की जाए। याचिकाकर्ता ने निर्दिष्ट प्राधिकारी से यह अनुरोध किया है कि वह यह मामला डी.आई.के पास भेजे तथा आगे जांग करे।

(9) निर्धारित सामान्य मूल्य (लगभग 12.75 अम. डॉ.) काफी कम है। इस संबंध में परिकलित सामान्य मूल्य कानूनन अंतिम उपाय होता है। याचिकाकर्ता ने (क) यूरोप में कीमत और (ख) यूरोप में आयात कीमत से संबंधित सूचना प्रदान की है।

(10) वर्तमान मामले और पिछले कुछ मामलों में आयातों की पहुंच कीमत के निर्धारण हेतु निर्दिष्ट प्राधिकारी ने सीमाशुल्क पर उपकर पर विचार किया है। तथापि, यह नोट किया जाता है कि सीमाशुल्क को शामिल किए जाने का मुद्दा बकाया बना हुआ है। अतः हितबद्ध पक्षकरों ने उपकर के मुद्दे का चुनिन्दा ढंग से समाधान करने में प्राधिकारी को गुमराह किया है।

(11) क्षति मार्जिन का निर्धारण उत्पाद शुल्क, उपकर और कमीशन को शामिल करके किया जाना चाहिए।

(12) आय का निर्धारण सकल नियत परिसंपत्तियों पर विचार करते हुए किया जाना चाहिए। 22% की आय अत्यंत कम है। परिसंपत्तियों के पुनर्मूल्यांकन की किसी भी हालत में उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। यदि मूल्य ह्रास पर विचार किया जाता है तो परिसंपत्तियों की मूल्य वृद्धि को भी हिसाब में लिया जाना चाहिए।

(13) जांचोत्तर अवधि में संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु की मात्रा में वृद्धि हुई जबकि कीमत में गिरावट आई ।

(14) चीन के निर्यातकों द्वारा शुल्क अपवंचन की पुरानी परंपरा रही है । निर्दिष्ट प्राधिकारी को आदेश के प्रचलानत्मक भाग में यह विनिर्दिष्ट करना चाहिए कि जांच से यह पता चला है कि इस वस्तु का उत्पादन चीन, भारत और यूरोप से इतर किसी देश में नहीं हुआ है । पाटनराधी शुल्क के अपवंचन को रोकने के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

(15) यह सुनिश्चित करने के लिए कि उक्त शुल्क का अपवंचन मूल्य का अधिक बीजक बनाकर किया गया है, याचिकाकर्ता का अनुरोध है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को शुलक की ऐसी न्यूनतम राशि निर्दिष्ट करनी चाहिए जिसे वसूल किया जा सके भले ही आयात कीमत अर्थात् शुल्क का बैंचमार्क स्वरूप कुछ भी हो ।

(16) वित्त मंत्रालय की अधिसूचना और वाणिज्य मंत्रालय की अधिसूचना में असंगति है । वित्त मंत्रालय ने निर्दिष्ट प्राधिकारी की सिफारिशों का कार्यान्वयन करने समय अयातों के पहुंच मूल्य की परिभाषा संशोधित की है । इस संशोधन के परिणामस्वरूप घरलू उद्योग के संरक्षण में कमी आई है ।

(17) प्रकटन विवरण के उत्तर में घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी के समक्ष पहले किए गए अनुरोधों को दोहराया है । इसके अलावा, उन्होंने वित्त मंत्रालय की अधिसूचना तथा वाणिज्य मंत्रालय की अधिसूचना में पहुंच मूल्य की परिभाषा के बीच असंगति का अनुरोध किया है । उन्होंने उल्लेख किया है कि इस संशोधन के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को संरक्षण कम हुआ है । उन्होंने प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि वह इस मुद्दे का समाधान करें । इसे अलावा उन्होंने जांचोत्तर अवधि में पर्याप्त आयातों द्वारा संबद्ध वस्तु की कीमत में अत्यधिक गिरावट तथा शुल्क के सतत अपवंचन का उल्लेख किया है । उन्होंने इस मुद्दे के निराकरण का प्राधिकारी से अनुरोध किया है ।

ड.2 निर्यातकों, आयातकों और एसोसिएशन के अनुरोध

14. निर्यातकों द्वारा सुनवाई के बाद और फ्रेगरेंस एंड फ्लेवर्स एसो. आफ इंडिया द्वारा प्रकटन पश्चात टिप्पणियां निम्नानुसार हैं :-

- (1) जांच अवधि में विनिमय दर में अत्यधिक परिवर्तन के कारण एकल विनिमय दर अपनाकर पहुंच मूल्य की गणना सही नहीं है ।
- (2) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पहुंच मूल्य की गणना हेतु 75% सीमाशुल्क पर विवार करने की त्रुटि की है ।
- (3) आयातों की पहुंच कीमत की गणना हेतु सीमाशुल्क पर 3% अधिभार पर विवार नहीं किया गया है ।
- (4) क्षति रहित कीमत आय की बढ़ी हुई दर पर आधारित है । 22% की आय प्रदान करना गलत और अतार्किक है ।

(5) डब्ल्यू टी ओ के समक्ष कमतर शुल्क नियम के प्रस्ताव में, क्षतिरहित कीमत की गणना के अंतिम विकल्प के रूप में लगाई गई पूँजी पर उचित आय पर विचार किया गया है।

(6) ब्याज की वास्तविक दर पर विचार किया जाना चाहिए क्योंकि घरेलू उद्योग ने आय की ऐसी उच्च दर कभी हासिल नहीं की है।

(7) निर्यातकों के निर्यातों का पहुंच मूल्य क्षति रहित कीमत से अधिक और उसके लगभग बराबर है।

(8) सही निर्धारण हेतु निर्दिष्ट प्राधिकारी को निर्यातकों द्वारा प्रदत्त सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की गणना के दावों का सत्यापन करना चाहिए।

एसोसिएशन द्वारा दिए गए तर्क

(9) कुमेरिन का उपयोग अगरबत्ती बनाने में किया जाता है। ऐसी 3 विनिर्माता एसोसिएशनें हैं जिनके लगभग 2000 सदस्य हैं जो मुख्यतः लघु और मझोले विनिर्माता हैं और ये अधिक पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण काफी अधिक प्रभावित होंगे। भारत में कुमेरिन का एकमात्र विनिर्माता है जो उद्योग की मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं है। पाटनरोधी शुलक के परिणामस्वरूप एकमात्र भारतीय विनिर्माता का एकाधिकार स्थापित हो गया है जिसने कुमेरिन की कीमत जून, 2010 अर्थात् पाटनरोधी शुल्क लागू किए जाने के तुरंत बाद से बढ़ाकर 30 रुपए प्रति कि.ग्रा. कर दी है। कच्ची सामग्री के रूप में कुमेरिन का उपयोग करने वाले शॉप एंड डिटरजेंट एंड कॉस्मेटिक्स एंड टायलटरिज इंड द्वारा लघु एवं मझोले विनिर्माताओं की पूर्ति की जाती है जो पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण कच्ची सामग्री (कुमेरिन) की कीमत में वृद्धि द्वारा अत्यधिक प्रभावित होते हैं।

(10) अब कुटीर उद्योग के अंतर्गत आने वाली अगरबत्ती में मुख्यतः ग्रामीण महिलाएं काम करती हैं और इसका बड़ी मात्रा में निर्यात किया जाता है। पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से कच्ची सामग्री की लागत में वृद्धि होगी जिससे ग्रामीण रोजगार तथा विदेशी मुद्रा पर प्रभाव पड़ेगा जिसे निर्यातों के जरिए अर्जित किया जाता है। पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बजाए कुमेरिन के एकमात्र विनिर्माता को इस तथ्य की वजह से कमतर लागत पर मांग को पूरा करने की क्षमता बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि भारत में श्रम लागत चीन से कम है और उसकी बिक्री प्रतिस्पर्धी कीमत पर करनी चाहिए।

ड.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

15. उपर्युक्त अनुरोधों का गिम्नानुसार विश्लेषण किया गया है :

(क) जहां तक विनिमय दर में अंतर का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु प्राधिकारी ने निर्यात के समय प्रचलित विनिमय दर पर विचार किया है। तथापि, प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई सतत पद्धति के अनुरूप परिवर्तन दरों में अंतर पर क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु विचार नहीं किया गया है।

(ख) उत्पादकों/निर्यातकों ने क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु प्राधिकारी द्वारा विचारित सीमाशुल्क का खंडन किया है। यह सपष्ट किया जाता है कि संगत अवधि में सीमाशुल्क 7.5% था। इसके अलावा, प्राधिकारी ने आयातों के पहुंच मूल्य की गणना हेतु 3% अधिभार जोड़ा है।

(ग) उचित लाभ के निर्धारण हेतु उत्पादकों/निर्यातकों ने क्षति रहित कीमत तथा 22% की आय प्रदान किए जाने का विरोध किया है। प्राधिकारी यह मानते हैं कि उसकी यह सतत परंपरा रही है कि लाभ की गणना हेतु लगाई गई पूंजी पर 20% की आय प्रदान की जाए। इसके अलावा, जहां तक डब्ल्यूटी ओ के समक्ष प्रस्ताव का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि डब्ल्यूटी ओ में विचाराधीन प्रस्ताव को वर्तमान निर्धारण हेतु प्राधिकारी के लिए विधिक दायित्व नहीं माना जा सकता।

(घ) निर्यातक ने दावा किया है कि पहुंच कीमत क्षति रहित कीमत से तुलनीय है। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि दोनों के बीच अंतर काफी अधिक है।

(ङ) जहां तक चीन जन.गण. से निर्यात कीमत और संबद्ध वस्तु के पहुंच मूल्य के निर्धारण का संबंध है, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत इन तर्कों को नोट किया है कि निर्यातक के दावे के अनुसार निर्यात कीमत को तब तक स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए जब तक इन दावों की पुष्टि भारतीय सीमाशुल्क को सूचित कीमतों द्वारा न की गई हो। सतत पद्धति के अनुरूप चीन जन.गण. के प्रतिवादी उत्पादकों/निर्यातकों के परिसरों में सत्यापन किया गया था। इस बीच प्राधिकारी ने डी जी सी आई एंड एस से प्राप्त आयात के आंकड़ों तथा सीमाशुल्क पत्तन प्राधिकरण से प्राधिकारी को मिले आंकड़ों की जांच की थी। घरेलू उद्योग ने भारत में हुए आयात तथा संबंधित आयातकों तथा निर्यातकों के नामों को प्रदर्शित करने वाला विवरण भी उपलब्ध कराया। आंकड़ों की जांच के आधार पर प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि भारतीय सीमाशुल्क को सूचित मूल्य तथा प्रतिवादी आयातक द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों और निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रस्तु आंकड़ों में भारी अंतर है। चूंकि भारतीय सीमाशुल्क और प्रतिवादी आयातक को सूचित आयात मूल्य काफी कम है और चूंकि पर्याप्त मात्रा में आयातों की निकासी इन कीमतों पर की गई है, इसलिए संबंधित निर्यातकों द्वारा दावा की गई निर्यात कीमतों की गहन जांच सीमाशुल्क पत्तन के आंकड़ों में सूचित कीमतों के संदर्भ में की गई है। इसके अलावा, सत्यापन दौरे के दौरान संबंधित निर्यातकों से विशिष्ट तौर पर यह कहा गया था कि वह भरोसेमंद साक्ष्य के आधार पर निर्यात कीमत के अपने दावे को न्यायोचित ठहराएं। पाटन मार्जिन से संबंधित पैरा में यह नोट किया गया है कि एक प्रमुख प्रतिवादी उत्पादन अथवा निर्यातक भरोसेमंद साक्ष्य के साथ निर्यात कीमत के बारे में प्राधिकारी को सूचना उपलब्ध नहीं करा सका है। निर्यात कीमत में भारी कीमत के मद्देनजर प्राधिकारी ने उन सभी मामलों में जिनमें आयात मूल्य में भारी अंतर है, भारतीय सीमाशुल्क पत्तन प्राधिकारी तथा भारतीय आयातक द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों पर भरोसा करना उचित समझा है।

(च) जहां तक बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे देश में उत्पाद की कीमत अथवा ऐसे तीसरे देशों से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण का संबंध है, सामान्य मूल्य के निर्धारण संबंधित पैरा में इस मामले की विस्तृत जांच की गई है।

(छ) जहां तक क्षति मर्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ उत्पाद शुल्क, उपकर और कमीशन को शामिल किए जाने के घरेलू उद्योग के दावे का संबंध है, प्राधिकारी अपनी उस सतत परंपरा को दोहराते हैं कि उत्पाद शुल्क पर इस वजह से विचार करना अपेक्षित नहीं है कि उत्पाद शुल्क की राशि वही होती है जो कि आयातों पर वसूली योग्य अतिरिक्त सीमाशुल्क की राशि होती है। जहां तक कमीशन का संबंध है, प्राधिकारी ने कमीशन को शामिल किए बिना क्षतिरहित कीमत निर्धारित की है। इसके अलावा, रिकॉर्ड में ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है कि निर्यातिक द्वारा भारत के किसी एजेंट को कमीशन का भुगतान किया गया है। इस प्रयोजनार्थ भारत से बाहर के किसी निर्यातिक को प्रदत्त कमीशन प्रासंगिक नहीं है।

(ज) घरेलू उद्योग ने घतिरहित कीमत के पुनः निर्धारण और सामान्य बिक्री एवं प्रशासनिक व्यय के अनुपात पर विचार करने के बाद उचित लाभ के निर्धारण का अनुरोध किया है और यह अनुरोध किया है कारोबार के अनुपात में घरेलू एवं निर्यातों के बीच कार्यशील पूँजी गत्त है। तथापि, प्राधिकारी यह मानते हैं कि क्षतिरहित कीमत का निर्धारण प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई सुसंगत पद्धति के आधार पर किया गया है।

(झ) जहां तक जांच अवधि के बाद की अवधि हेतु आयातों के आंकड़ों का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के लिए आयात के आंकड़ों/सूचना पर ही वर्तमान जांच हेतु विचार करना अपेक्षित है, जांचोत्तर अवधि के बाद किसी सूचना पर विचार करना उचित नहीं होगा।

(ञ) घरेलू उद्योग ने यह भी उल्लेख किया है कि सीमाशुल्क द्वारा जारी अधिसूचना में आयातों की पहुंच कीमत की परिभाषा में अतिरिक्त विशेष सीमाशुल्क शामिल किया गया है जबकि प्राधिकारी ने इसे विशेष अतिरिक्त सीमाशुल्क को छोड़कर विनिर्दिष्ट किया है। इस मामले पर विचार किया गया है और प्रारंभिक जांच परिणामों में पूर्व में की गई संस्तुति के अनुसार यह नोट किया जाता है कि अंतिम जांच परिणाम में पहुंच मूल्य में विशेष अतिरिक्त सीमाशुल्क शामिल नहीं होता है। इसे इस मामले की वित्त मंत्रालय को संस्तुति की जा रही है।

16. प्राधिकारी ने जांच की कार्रवाई के दौरान विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के विभिन्न अनुरोधों और उनके द्वारा उठाए गए मुद्दों पर विधिवत विचार किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि अधिनियम और नियमावली के अनुसार जांच की जा रही है। इसके अलावा प्राधिकारी ने जांच की कार्रवाई के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उपलब्ध कराए गए "सकारात्मक साक्ष्यों" पर भरोसा किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यदि कोई हितबद्ध पक्षकार कोई सकारात्मक साक्ष्य प्रेदान किए बिना तर्क देता है और जहां सार्वजनिक स्रोत से उक्त तर्क की प्रमाणिकता तथा विश्वसनीयता पर भरोसा करना संभव नहीं है, वहां ऐसे तर्कों को स्वीकार करना संभव नहीं है। प्रकटन विवरण जारी होने के बाद घरेलू उद्योग तथा फ्रगरेंश तथा फ्लेवर्स एसो. ऑफ इंडिया से सूचनाएं प्राप्त हुई हैं।

- (i) कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने अपने प्रकटन विवरण की टिप्पणी में कहा है कि याचिकाकर्ता भारत में विचाराधीन उत्पाद का प्रमुख उत्पादक है। मामले की जांच की गई है तथा यह नोट किया गया है कि याचिकाकर्ता ने अपने संगत भाग में यह बताया है भारत में विचाराधीन उत्पाद के ऐसे दो और उत्पादक हैं जिन्होंने उत्पादन बंद किया है। प्राधिकारी को नियमानुसार हर हाल में इस बात पर विचार करना होता है कि क्या याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग के आधार की पुष्टि करता है और वह घरेलू उद्योग है। यद्यपि, याचिकाकर्ता भारत में विचाराधीन उत्पाद का एकमात्र उत्पादक है तथापि, उससे पाटनरोधी नियमों के अंतर्गत राहत मांगने का अधिकार वर्जित नहीं होता है।
- (ii) जहां तक जांचोत्तर अवधि में हुई कीमत में वृद्धि से जुड़े तर्क का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच से यह पता चला है कि याचिकाकर्ता को पाटन के कारण वित्तीय घाटा हो रहा है। यदि घरेलू उद्योग कीमतों में अत्यधिक वृद्धि करता है तो उपभोक्ता वर्तमान पाटनरोधी शुलक की समीक्षा का अनुरोध करने के लिए स्वतंत्र हो जाएंगे। ऐसा घरेलू उद्योग के लिए बेहतर है और उसने यह अनुरोध किया है कि जांच अवधि के दौरान प्रचलित कीमत से काफी कम कीमत पर भारत में अत्यधिक सात्रा में आयात हो रहे हैं।
- (iii) जहां तक उपभोक्ताओं पर पाटनरोधी शुलक लगाए जाने, अंतिम उत्पाद की लागत और रोजगार में वृद्धि के आरोपित प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि एसोसिएशन ने मात्रात्मक दृष्टि से कोई सूचना प्रदान नहीं की है। इसके अलावा, पाटनरोधी शुलक का उद्देश्य घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाले पाटन की रोकथाम करना है।
- (iv) जहां तक आयातों पर पहले से प्रदत्त सीमाशुलक (और जिससे घरेलू उद्योग को राहत मिल रही है) का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण प्रचलित सीमाशुलक को जोड़ने के बाद किया गया है। अतः वर्तमान क्षति का निर्धारण घरेलू उद्योग को प्रदत्त सीमाशुलक संरक्षण को शामिल करने के बाद किया गया है।
- (v) हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग भारतीय मांग को पूरा नहीं कर सकता। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की मांग लगभग 294 मी.ट. थी जो सर्वोच्च थी। घरेलू उद्योग के पास 400 मी.ट. की क्षमता है। केवल घरेलू उद्योग समूची भारतीय मांग को पूरा करने की स्थिति में होना चाहिए। तथापि, यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू मांग को पूरा करने की क्षमता पाटित आयातों से संरक्षण प्राप्त करने की अनिवार्य पूर्वप्रीक्षा नहीं है।
- (vi) सीमित देशों में उत्पादित संबद्ध वस्तु के मुद्दे के बारे में यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि संबद्ध वस्तु का उत्पादन केवल चीन, भारत और फ्रांस में किया जाता है। घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी की जानकारी में यूरोपीय आयोग द्वारा की गई अपवंचन की कार्रवाईयों को भी लाया है।

प्राधिकारी ने यह भी नोट किया है कि इस संबंध में किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने घरेलू उद्योग के दावे का खंडन नहीं किया है।

च. पाटन मार्जिन की गणना हेतु कार्य पद्धति

च.1 चीन जन.गण के मामले में पाटन मार्जिन का निर्धारण

17. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पिछले तीन वर्षों में डब्ल्यू टी ओ के अन्य सदस्यों द्वारा पाटनरोधी जांच में चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है। अतः पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8(2) के अनुसार प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ उपर्युक्त नियमावली के अनुसार चीन जन.गण. को निर्यातिक देश अथवा अलग-अलग निर्यातकों द्वारा उपर्युक्त मान्यता के खंडन के अधीन एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है।

18. यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैराग्राफ 8 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी मान्यता का खंडन किया जा सकता है यदि चीन के निर्यातिक पैराग्राफ 8 में उप-पैराग्राफ (3) में विनिर्दिष्ट मापदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध कराएं और इसके विपरीत तथ्यों को सिद्ध करें। चीन जन.गण. के संबद्ध वस्तु के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार संबंधी प्रश्नावली के उत्तर में पैराग्राफ 8 के उप पैराग्राफ (3) में यथाउल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करने होंगे ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मापदंडों पर विचार करें कि क्या:-

- क. चीन जन.गण. की संबंधित फर्मों के कीमत, लागत और निविष्टियों, कच्ची सामग्री, प्रौद्योगिकी और श्रम की लागत, उत्पादन, बिक्री और निवेश संबंधी निर्णय पूर्ति और मांग को दर्शाने वाले बाजार के संकेतकों की प्रतिक्रियास्वरूप लिए जाते हैं और जिनमें इस संबंध में राज्य का कोई खास हस्तक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत बाजार मूल्यों को पर्याप्त रूप से दर्शाती है;
- ख. ऐसी फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति विशेष रूप से परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य बढ़ेखातों, वस्तु विनिमय व्यापार और ऋणों की क्षतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संबंध में पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली से हुई भारी विकृतियों के अधीन है;
- ग. ऐसी फर्में दिवालियापन और संपत्ति संबंधी कानूनों के अधीन हैं जो फर्मों की विधिक निश्चितता और प्रचालन की स्थिरता की गारंटी देते हैं।
- घ. विनिमय दर परिवर्तन बाजार की दर के आधार पर किए जाते हैं।

सामान्य मूल्यच.2 बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार का दावा, विश्लेषण और जांच परिणाम

19. चीन जन.गण. के केवल निम्नलिखित दो उत्पादकों ने उत्तर दिया है और अपने जवाब प्रस्तुत किए हैं :

1. मै.जियानगिन बाईहुई फ्रेगरेंस कं. लि.
2. यिंघाई (कांगझू) एरोमा कैमिकल कं. लि.

मै.जियानगिन बाईहुई फ्रेगरेंस कं. लि.

20. मै.जियानगिन बाईहुई फ्रेगरेंस कं. लि. चीन जन.गण. ने संबद्ध वस्तु के उत्पादक और निर्यातक के रूप में इस मामले में प्रश्नावली का उत्तर और बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी उत्तर प्रस्तुत किया है। उत्तरों की जांच के बाद प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणामों में नोट किए गए अनुसार अपूर्णता पत्र के रूप में कुछ अतिरिक्त सूचना मांगी थी। प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद संबंधित उत्पादक/निर्यातक ने अपूर्णता पत्र का उत्तर प्रस्तुत किया और बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार के बारे में अपने दावे के मौके पर सत्यापन की भी स्वीकृति प्रदान की।

21. मौके पर सत्यापन के दौरान एम ई टी प्रश्नावली के उत्तर की जांच की गई थी। यह स्मरणीय है कि मै. बाईहुई ने बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार का दावा किया और प्राधिकारी से सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ घरेलू बिक्री कीमत पर ध्यान देने का अनुरोध किया। सत्यापन प्रक्रिया के दौरान संबंधित उत्पादक को यह सलाह दी गई थी कि वह इस आशय के संगत दस्तावेज के साथ इस दावे की पुष्टि करें कि वे किस प्रकार बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान किए जाने से संबंधित पाटनरोधी नियामवली के अनुबंध-1 के पैरा 8 से संबंधित विभिन्न मापदंडों की पुष्टि करते हैं। तथापि, उत्पादक/निर्यातक ने जांच दल को ये दस्तावेज प्रस्तुत करने से इंकार किया। इसके अलावा, संबद्ध निर्यातक/उत्पादक ने यह सूचित किया कि बाजार अर्थव्यवस्था के दावे से संबंधित दस्तावेज लगभग उपलब्ध नहीं हैं और तदनुसार उन्हें सत्यापन दल को उपलब्ध नहीं कराया जा सकता। अतः इस बात के मद्देनजर प्राधिकारी बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के बारे में उत्पादक/निर्यातक के दावे की जांच करने में असमर्थ हैं और उन्होंने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 के अनुसार प्रतिवादक उत्पादक/निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य निर्धारित किया है।

यिंघाई (कांगझू) एरोमा कैमिकल कं. लि. (मै. यिंघाई)

22. मै. यिंघाई ने संबद्ध वस्तु के एक उत्पादक और निर्यातक के रूप में प्रश्नावली का उत्तर और बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार संबंधी उत्तर प्रस्तुत किया है। उत्तर में दी गई अपूर्ण सूचना के संबंध में कुछ अतिरिक्त जानकारी मांगी गई थी। प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद संबंधित निर्यातक ने अपूर्णता पत्र का उत्तर प्रस्तुत किया और बाजार

अर्थव्यवस्था के व्यवहार के बारे में अपने दावे के मौके पर सत्यापन की भी स्वीकृति प्रदान की।

23. मौके पर सत्यापन के दौरान निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर और बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार संबंधी प्रश्नावली के उत्तर की जांच की गई थी। एम.ई.टी प्रश्नावली के उत्तर में मै. यिंघाई ने बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार का दावा किया और प्राधिकारी से सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ घरेलू बिक्री कीमत पर ध्यान देने का अनुरोध किया। सत्यापन प्रक्रिया के दौरान संबंधित उत्पादक को यह सलाह दी गई थी कि वह इस आशय के दस्तावेज के साथ इस दावे की पुष्टि करें कि वे किस प्रकार बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान किए जाने से संबंधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 से संबंधित विभिन्न मापदंडों की पुष्टि करते हैं। तथापि, उत्पादक/निर्यातक ने जांच दल को ये दस्तावेज प्रस्तुत करने से इंकार किया। इसके अलावा, संबद्ध निर्यातक/उत्पादक ने यह सूचित किया कि बाजार अर्थव्यवस्था के दावे से संबंधित दस्तावेज लगभग उपलब्ध नहीं हैं और तदनुसार उन्हें सत्यापन दल को उपलब्ध नहीं कराया जा सकता। अतः इस बात के मद्देनजर प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 के अनुसार प्रतिवादी उत्पादक/निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य निर्धारित किया है।

निर्यात कीमत

च.3 निर्यात कीमत का निर्धारण

मै. जियानगिन बाईहुई फ्रेगरेंस कंपनी लि. (बाईहुई)

24. मै.जियानगिन बाईहुई फ्रेगरेंस कं. लि. चीन जन.गण. ने संबद्ध वस्तु के उत्पादक और निर्यातक के रूप में इस मामले में प्रश्नावली का उत्तर और बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी उत्तर प्रस्तुत किया है। उत्तरों की जांच के बाद प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणामों में नोट किए गए अनुसार अपूर्णता पत्र के रूप में कुछ अतिरिक्त सूचना मांगी थी। प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद संबंधित उत्पादक/निर्यातक ने अपूर्णता पत्र का उत्तर प्रस्तुत किया और बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार तथा निर्यात कीमत के बारे में अपने दावे के मौके पर सत्यापन की भी स्वीकृति प्रदान की।

25. प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद निर्यातक के आंकड़ों का प्राधिकारी ने संबद्ध उत्पादक/निर्यातक के परिसरों में मौके पर सत्यापन के दौरान सत्यापन किया था। सत्यापन की प्रक्रिया के दौरान निर्यातक प्रश्नावली के परिष्टवार उत्तर की जांच की गई थी। यह स्मरणीय है कि सत्यापन के दौरे से पूर्व संबद्ध उत्पादक/निर्यातक ने उत्पादक को सत्यापन से पूर्व मूल दस्तावेजों के साथ अन्य दस्तावेजों की सूची अपने पास तैयार रखने के लिए कहा गया था। इनमें सामान्य बैंकिंग माध्यम के जरिए भारतीय आयातकों से प्राप्त भुगतान हेतु बीजक के दस्तावेज शामिल थे। संबद्ध उत्पादक/निर्यातक से यह भी कहा गया था कि वह चीन के सीमाशुलक की वापसी प्राप्त करने हेतु प्रयोग में लाए जाने वाले मूल वैट रजिस्टर और वैट बीजक भी तैयार रखें। संबद्ध उत्पादक/निर्यातक ने

ऐसे 17 सौदों के बिक्री बीजक प्रस्तुत किए जिनकी सूचना परिशिष्ट 2 में दी गई है। बिक्री बीजक के अलावा संबद्ध उत्पादक/निर्यातक ने बिक्री संविदा/पैकिंग सूची, लदान बिल भी प्रदर्शित किए। तत्पश्चात संबद्ध उत्पादक/निर्यातक से विशेष तौर पर यह कहा गया था कि वह सामान्य बैंकिंग माध्यमों के जरिए भारतीय आयातकों से प्राप्त निर्यात आय के भुगतान से संबंधित मूल दस्तावेज प्रस्तुत करे; उनसे यह स्पष्ट करने के लिए भी कहा गया था कि जांच अवधि के दौरान भारतीय आयातकों को उनके द्वारा किए गए अन्य बड़े निर्यात सौदों की सूचना परिशिष्ट 2 में क्यों नहीं दी गई है। इस संबंध में विस्तृत सत्यापन रिपोर्ट संबंधित निर्यातक के पास उसकी टिप्पणियों के लिए भेजी गई थीं। इस सत्यापन रिपोर्ट के उत्तर में संबंधित निर्यातक ने यह पुनः अनुरोध किया है कि उन्होंने अपने उत्तर में समस्त पोतलदान और प्रस्तुत कर दिए हैं और अपने पोतलदानों के संबंध में ऋण सलाह प्रस्तुत कर दी है। तथापि, यह नोट किया जाता है कि उक्त निर्यातक सामान्य बैंकिंग माध्यम के जरिए भारतीय आयातकों से प्राप्त भुगतान के बौरे प्रस्तुत करने में असमर्थ रहा है तथा मूल रिकॉर्ड (मूल वैट रजिस्टर सहित) तथा निर्यात मात्रा की निर्यात बिक्री को प्रस्तुत करने और उसकी पुष्टि प्रतिवादी भारतीय आयातक द्वारा भारतीय सीमाशुलक पत्तन तथा आयात के आंकड़ों के साथ करने में असमर्थ रहा है। इसके अलावा, उक्त निर्यातक इस आशय की टिप्पणी भी नहीं कर सका कि उनकी ओर से किए गए अधिकांश निर्यात सौदों का उल्लेख भारतीय पत्तन रिकॉर्ड में क्यों नहीं किया गया है अथवा भारतीय आयातक से प्राप्त सूचना का प्रदर्शन उनके रिकॉर्ड में क्यों नहीं किया गया है।

26. उपरोक्त को देखते हुए प्राधिकारी ने निर्यात कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ उक्त उत्पादक/निर्यातक के आंकड़े स्वीकार नहीं किए हैं। अतः मै. जियांनगिन बाईहुई फ्रेगरेंस कंपनी लि. के लिए कोई पृथक पाटन मार्जिन निर्धारित नहीं किया गया है।

यिंघाई (कांगड़ू) एरोमा कैमिकल कं. लि. (यिंघाई)

27. मै. यिंघाई (कांगड़ू) एरोमा कैमिकल कं. लि. ने संबद्ध वस्तु के उत्पादक तथा निर्यातक के रूप में प्रश्नावली तथा बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार का उत्तर दायर किया है। परिशिष्ट 8 में प्रदत्त अपूर्ण सूचना, विभिन्न परिशिष्टों में कच्ची सामग्री की खपत में अंतर, विचाराधीन उत्पाद तथा अन्य उत्पादों के बीच आबंटन के आधार और कंपनी की शेयरधारिता में विसंगति से संबंधित स्पष्टीकरण के संबंध में कुछेक अतिरिक्त सूचना मांगी गई थी। प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद संबंधित उत्पादक/निर्यातक ने अपूर्णता पत्र का उत्तर प्रस्तुत किया और बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार तथा निर्यात कीमत के बारे में अपने दावे के मौके पर सत्यापन की भी स्वीकृति प्रदान की।

28. प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद निर्यातक के आंकड़ों का प्राधिकारी ने संबद्ध उत्पादक/निर्यातक के परिसरों में मौके पर सत्यापन के दौरान सत्यापन किया था। सत्यापन की प्रक्रिया के दौरान निर्यातक प्रश्नावली के परिष्टवार उत्तर की जांच की गई थी। यह स्मरणीय है कि सत्यापन के दौरे से पूर्व संबद्ध उत्पादक/निर्यातक ने उत्पादक को सत्यापन से पूर्व मूल दस्तावेजों के साथ अन्य दस्तावेजों की सूची अपने पास तैयार रखने के लिए कहा गया था। इनमें सामान्य बैंकिंग माध्यम के जरिए भारतीय आयातकों

से प्राप्त भुगतान हेतु बीजक के दसतावेज शामिल थे। संबद्ध उत्पादक/निर्यातक से यह भी कहा गया था कि वह चीन के सीमाशुलक की वापसी प्राप्त करने हेतु प्रयोग में लाए जाने वाले मूल वैट रजिस्टर भी तैयार रखें। सत्यापन के दौरान निर्यातक/उत्पादक ने अपने रजिस्टर में रखे गए रिकॉर्ड्स और सामान्य बैंकिंग माध्यमों के जरिए भारतीय आयातकों से उन्हें प्राप्त भुगतान सहित वैट बीजकों के मूल रिकॉर्ड प्रस्तुत किए। वस्तुतः उनके आंकड़ों का सत्यापन भारतीय सीमाशुल्क पत्तन से प्राप्त आयात सूचना के साथ भी किया गया था। तत्पश्चात् सत्यापन रिपोर्ट उत्पादक/निर्यातक के पास टिप्पणियों के लिए भेजी गई थी लेकिन आज की तारीख तक उनसे कोई टिप्पणी प्राप्त नहीं हुई है।

29. उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी ने निर्यात कीमत तथा क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु उत्पादक/निर्यातक द्वारा प्रस्तुत और प्राधिकारी द्वारा बाद में सत्यापित आंकड़ों को बांद में स्वीकार किया है।

च.2 सामान्य मूल्य का निर्धारण

30. प्रारंभिक जांच परिणामों में प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुरूप किसी अन्य उचित आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया था तथापि घरेलू उद्योग ने इसका विरोद्ध किया और यह दावा किया कि चूंकि बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत अथवा ऐसे तीसरे देशों से भारत के लिए कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य उपलब्ध है, इसलिए "किसी अन्य उचित आधार" की तुलना में इसे तरजीह दी जानी चाहिए।

31. इस मामले की जांच की गई है और यह नोट किया जाता है कि चीन के उत्पादक यह सिद्ध करने में समर्थ नहीं रहे हैं कि वे बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार के हकदार हैं। इस संबंध में नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 में निम्नानुसार प्रावधान है :

"गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा संरचित मूल्य, अथवा किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव न हो, अथवा अन्य किसी समुचित आधार पर किया जाएगा, जिसमें भारत में समान वस्तु के लिए वास्तविक रूप से संदर्भ अथवा भुगतान योग्य कीमत, जिसमें यदि आवश्यक हो तो लाभ की समुचित गुंजाइश भी शामिल की जाएगी। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे समुचित देश का चयन उचित तरीके से किया जाएगा जिसमें संबंधित देश के विकास के स्तर तथा प्रश्नगत उत्पाद का ध्यान रखा जाएगा और चयन के समय उपलब्ध कराइ गई किसी विश्वसनीय सूचना का भी ध्यान रखा जाएगा। जहां उचित हो उचित समयसीमा के भीतर किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के संबंध में इसी प्रकार के मामले में की गई जांच पर भी ध्यान दिया जाएगा। जांच से संबंधित पक्षों को बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के उपर्युक्त प्रकार से चयन के बारे में बिना किसी अनुचित विलंब के सुनित किया जाएगा और उन्हें अपनी टिप्पणियां देने के लिए उचित अवधि प्रदान की जाएगी।"

32. इस प्रकार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के मामले में सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु नियमों में किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में उत्पाद की कीमत अथवा भारत सहित अन्य देशों के लिए ऐसे तीसरे देशों से कीमत पर विचार करने का प्रावधान है तथापि, इस मामले में यह नोट किया जाता है कि उचित बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश से भारत में संबद्ध वस्तु के आयात की मात्रा काफी कम है और उक्त देश (यूरोपीय संघ) में कीमत से भी चीन से हुए पाटन के कारण प्रभाव पड़ सकता है। अतः प्राधिकारी "किसी अन्य उचित आधार" पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करना उचित समझते हैं जैसा कि प्रारंभिक जांच परिणामों के चरण पर किया गया था। तदनुसार चीन जन.गण. के इन सभी निर्यातकों के लिए विचाराधीन उत्पाद के कारखाना सामान्य मूल्य का निर्धारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया गया है। सामान्य मूल्य का परिकलन प्रमुखित निविष्टियों की उपलब्ध अंतर्राष्ट्रीय कीमत को ध्यान में रखकर किया गया है। सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु परिवर्तन लागत तथा घरेलू उद्योग के एस जी ए व्यय को स्वीकार किया गया है। 5% के उचित लाभ मार्जिन को जोड़ने के बाद चीन जन.गण सभी उत्पादकों/निर्यातकों के संबद्ध वस्तु का परिकलित सामान्य मूल्य निकाला गया है। इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य 12.55 अम. डॉ. प्रति किग्रा. बनता है।

च.3. निर्यात कीमत का निर्धारण

33. प्राधिकारी ने रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों के अनुसार प्रतिवादी निर्यातकों से इतर निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत निर्धारित की है। अतः प्राधिकारी ने रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर चीन जन.गण. के सभी गैर-प्रतिवादी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए निर्यात कीमत अनन्तिम रूप से निर्धारित की है। प्रतिवादी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का अनन्तिम निर्धारण उनकी परिशिष्ट-वार सूचना और उनके द्वारा दावा किए गए सभी समायोजनों के आधार पर भारत को उनकी कीमतों पर विचार करने के बाद किया गया है। अन्य निर्यातकों के लिए निवल निर्यात कीमत को समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, कमीशन, अंतर्राष्ट्रीय भाड़े, पत्तन प्रभार और बैंक के कमीशन के लिए समायोजित किया गया है। यह समायोजन इन सहयोगी निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के अनुसार किया गया है।

च.4. पाटन मार्जिन का निर्धारण

34. ऊपर यथा निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करते हुए पाटन मार्जिन निम्नानुसार बनता है :

	इकाई	यिंघाई	अन्य
सामान्य मूल्य	अम.डॉ./कि.ग्रा.	****	***
निवल निर्यात कीमत	अम.डॉ./कि.ग्रा.	****	***
पाटन मार्जिन	अम.डॉ./कि.ग्रा.	****	***

पाटन मार्जिन	%	9.23	28.14
--------------	---	------	-------

35. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीनजंन.गण. से पाटन मार्जिन काफी अधिक है और निर्धारित न्यूनतम सीमाओं से अधिक है ।

छ. क्षति निर्धारण एवं कारणात्मक संबंध की जांच हेतु कार्य पद्धति

छ.1 क्षति एवं कारणात्मक संबंध की जांच

36. अनुबंध-II के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम-11 में यह उपबंध है कि किसी क्षति जांच में "..... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत कारकों को ध्यान में रखते हुए " ऐसे कारकों की, जांच शामिल होगी जिनसे घरेलू उद्योग को हुईं क्षति का पता चल सकता हो । कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उंस वृद्धि में रुकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती ।"

37. प्रातिधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने का आवेदन मै. एटलस फाइन कैमिकल्स लि. ने दायर किया है जिसका उत्पादन भारत में संबद्ध वस्तु के कुल उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है । नियमावली के नियम 2(ख) के अनुसार उसे इस जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग माना गया है ।

38. भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन जैसे संकेतकों पर नियमावली के अनुबंध-II के अनुसार विचार करना अपेक्षित होता है । उपर्युक्तानुसार उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा आदि जैसे घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले सभी आर्थिक मापदंडों की जांच भी अपेक्षित होती है ।

छ.2. घरेलू उद्योग के विचार

39. घरेलू उद्योग के विचार निम्नानुसार हैं:

(i) वर्तमान याचिका भारतीय बाजार में चीन जन.गण. से कुमेरिन के पाटित आयातों के खिलाफ पाटनरोधी शुलक लगाए जाने के बारे में है । भारत में इस उत्पाद का पाटन कोई नई धटना नहीं है ।

- (ii) बढ़े हुए आयातों के कारण कार्य निष्पादन की स्थिति घरेलू बिक्रियों, उत्पादन, क्षमता उपयोग, उत्पादकता, माल सूची, बाजार हिस्से, लाभ, निवेशों पर आय, नकद प्रवाह आदि की दृष्टि से खराब हुई है।
- (iii) देश में उत्पाद की मांग में सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है जबकि इसी समय घरेलू उद्योग की बिक्रियों में नकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा घटा है।
- (iv) चीन जन.गण. से पाठित आयातों की मात्रा में क्षति अवधि के दौरान समग्र रूप से काफी अधिक वृद्धि हुई है।
- (v) आयातों में भारत में कुल आयातों, उत्पादन और खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है।
- (vi) समग्र रूप से और उत्पादन तथा खपत की दृष्टि से आयातों में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई है।
- (vii) इसे अलावा, घरेलू उद्योग की निर्यात मात्राओं में लगातार गिरावट प्रदर्शित हुई है जिससे विश्व बाजार में चीन की पाठित वस्तुओं का काफी अधिक बाजार हिस्सा प्रदर्शित होता है।
- (viii) भारत औसत आयात कीमत (मूल सीमाशुल्क शामिल करने के बाद) घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से काफी कम रही है। इस प्रकार इसके परिणामस्वरूप भारी कीमत कटौती हुई है।
- (ix) सीमाशुल्क और पाठित सीआईएफ कीमत दोनों के कारण आयातों की पहुंच कीमत में काफी गिरावट हुई है। इससे घरेलू उद्योग पर प्रत्यक्ष प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। आयातों की पहुंच कीमत में गिरावट के कारण भारतीय उत्पादक कीमत में विधिसम्मत वृद्धि नहीं कर सके हैं।
- (x) आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत से काफी कम है। यह भी देखा जाता है कि आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर भारी न्यूनकारी प्रभाव पड़ा है।
- (xi) घरेलू उद्योग के उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्रियों में समग्र और सापेक्षिक दोनों दृष्टियों से गिरावट आई है।
- (xii) विचाराधीन उत्पाद हेतु घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में क्षति अवधि और वर्ष 2006-07 के बाद से विकृति आई है। घरेलू उद्योग को भारी घाटे उठाने पड़ रहे हैं।
- (xiii) घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में जबरदस्त गिरावट आई है जबकि आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है।
- (xiv) यह देखा जाता है कि उत्पादन में गिरावट के साथ घरेलू उद्योग की उत्पादकता में भी कमी आई है।
- (xv) घरेलू उद्योग के निवेश पर आय (एन एफ ए आधार) में क्षति अवधि के दौरान भारी विकृति आई है। नकद लाभ की भी स्थिति ऐसी ही है। इससे स्पष्ट रूप से चीन जन.गण. से पाठित आयातों का कीमत हासकारी और न्यूनकारी प्रभाव परिलक्षित होता है, जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को भारी घाटा उठाना पड़ा है।
- (xvi) माल सूचियों के स्तर में भारी वृद्धि हुई है, जिससे यह संकेत मिलता है कि जांच अवधि के दौरान क्षमता उपयोग केवल 43% के स्तर पर भी मालसूचियों में भारी वृद्धि हुई है।

(xvii) यह देखा गया है कि बिक्रियों, उत्पादन, क्षमता उपयोग की दृष्टि से वृद्धि नकारात्मक रही है। नकद लाभों, लाभों, निवेश पर आय की स्थिति भी क्षति अवधि के दौरान इसी प्रकार की रही है।

(xviii) संबद्ध देश से पाटन मार्जिन न केवल न्यूनतम सीमा से अधिक है बल्कि काफी अधिक है। घरेलू उद्योग पर पाटन का प्रभाव अत्यधिक है और यह धीरे-धीरे और तेज हो रहा है।

छ.3. निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

40. घरेलू उद्योग को हुई क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार द्वारा कोई उत्तर नहीं दिया गया है।

छ.4. प्राधिकारी द्वारा जांच

41. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों को नोट किया है। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में इन दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच की व्यवस्था है, (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातकों के परिणामी प्रभाव। पाटित आयातों की मात्रात्मक प्रभाव की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।

42. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (iv) में निम्नानुसार प्रावधान है :

"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले समस्त संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमत, पाटन मार्जिन की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारकों, नकद प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का मूल्यांकन शामिल होगा।"

प्राधिकारी ने तथ्यों और हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों को ध्यान में रखते हुए क्षति मापदंडों की तथ्यपरक जांच की है।

छ.5 पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

43. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से पिछले तीन वर्षों और जांच अधिक के दौरान भारत में किए गए संबद्ध वस्तु के आयातों के बौरों की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया था। डी जी सी आई एंड एस से प्राप्त सूचना का विश्लेषण किया गया और उसकी लुलना आई बी आई एस (द्वितीयक रूपों) से प्राप्त सूचना के साथ की गई थी। घरेलू उद्योग द्वारा साक्षों सहित यह दावा किया गया था कि संबद्ध वस्तु का आयात एक से अधिक शीषों के अंतर्गत किया गया है और इस प्रकार आई बी आई एस से प्राप्त सूचना पर विचार किया जाना चाहिए क्योंकि उसमें अधिक मात्राएं दिखाई गई हैं। विस्तृत जांच के बाद यह निर्णय लिया गया कि आई बी आई एस से प्राप्त सूचना पर विचार किया जाए क्योंकि उसमें अधिक मात्राएं दर्शायी गयी थीं।

आयात, मांग, मात्रा तथा बाजार हिस्सा:-

44. देश में इस उत्पाद की मांग का आकलन घरेलू उत्पादकों की घरेलू बिक्रियों और सभी रूपों से आयातों को जोड़कर किया गया है।

आयात विवरण

45. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों में क्षति अधिक के दौरान समग्र रूप से भारी वृद्धि हुई है। इसके अलावा संबद्ध देश का बाजार हिस्सा इसी अधिक के दौरान काफी अधिक बढ़ गया है जैसा कि निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है :-

विवरण	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अधिक
आयातक	मी.ट.	188.25	194.10	219.50	251.36
चीन जन.गण.	मी.ट.	149.85	158.65	204.05	219.45
अन्य देश	मी.ट.	38.40	35.45	15.45	31.91
आयातों में बाजार हिस्सा	%				
चीन	%	79.60	81.74	92.96	87.31
अन्य देश	%	20.40	18.26	7.04	12.69

मांग विवरण

46. विचाराधीन उत्पाद की मांग में संपूर्ण क्षति अधिक के दौरान वृद्धि हुई है और क्षति अधिक के दौरान इसमें 17% तक वृद्धि हुई है। इसके अलावा, संबद्ध देश से संबद्ध

वस्तु के आयातों में इसी अवधि के दौरान समग्र रूप से वृद्धि हुई है। यह भी नोट किया जाता है कि पाटित आयातों में यह वृद्धि मांग में हुई वृद्धि से अधिक थी।

विवरण	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
कुल आयात	मी.ट.	188.25	194.10	219.50	251.36
घरेलू उद्योग की विक्री	मी.ट.	62.97	63.37	58.93	42.19
मांग	मी.ट.	251.22	257.47	278.43	293.55
मांग सूचकांक		100	102.49	110.83	116.85

विभिन्न मापदंडों के संबंध में आयात

47. यह भी नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद के पाटित आयातों में क्षति अवधि के दौरान भारत में समान उत्पाद के उत्पादन की दृष्टि से वृद्धि हुई है। इसके अलावा, इनमें मांग में हिस्से और याचिकाकर्ता की बिक्रियों की दृष्टि से भी वृद्धि हुई है।

विवरण	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
निम्नलिखित के संबंध में पाटित आयात					
कुल आयातों में हिस्सा	%	79.60	81.74	92.96	87.31
मांग में हिस्सा	%	59.65	61.62	73.29	74.76
भारत में उत्पादन	%	57.85	90.54	112.40	128.91
याचिकाकर्ता की बिक्रियां	%	237.97	250.34	346.25	520.16

घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा

48. संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं की इस वृद्धि के परिणामस्वरूप क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है।

विवरण	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
मांग में बाजार हिस्सा	%				
चीन से आयात	%	59.65	61.62	73.29	74.76
अन्य देशों से आयात	%	15.29	13.77	5.55	10.87
घरेलू उद्योग की विक्री	%	25.07	24.61	21.17	14.37

49. इस प्रकार यह नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद की मांग में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है और इसमें क्षति अवधि के दौरान लगभग 17% तक की वृद्धि हुई है। इसके अलावा संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों में इसी अवधि के दौरान समग्र रूप से वृद्धि हुई है। यह भी नोट किया जाता है कि पाटित आयातों में हुई वृद्धि मांग में हुई वृद्धि से अधिक थी। यह भी नोट किया गया है कि आयातों में सामान्यतः विभिन्न स्रोतों से भारत में विचाराधीन उत्पाद के आयातों की दृष्टि से और विशेष रूप से संबद्ध देश से वृद्धि हुई है। यह भी नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद के आयातों में भारत में समान उत्पाद के उत्पादन की दृष्टि से वृद्धि हुई है। इसके अलावा, संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों में इस वृद्धि के परिणामस्वरूप क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। इस प्रकार यह निर्धारित किया जाता है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देश से पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के कारण भारी घाटा उठाना पड़ा है।

आयातों का कीमत प्रभाव

50. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में इस बात की जांच की गई है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में काफी अधिक कमी करना है या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा महत्वपूर्ण स्तर तक बढ़ गई होती। संबंधित उत्पाद के लिए निर्यातित उत्पाद के पहुंच मूल्य और घरेलू बाजार के लिए घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमत के बीच तुलना की गई है जिसमें सभी छूटों और करों को व्यापार के समान स्तर पर निवल रूप में शामिल किया गया है। घरेलू उद्योग की कीमतों को कारखाना द्वारा स्तर पर निर्धारित किया गया था। संबंधित संबद्ध देश की सी आई एफ कीमतों को आयात के बाद लागू शुल्कों हेतु समायोजित किया गया था। इस तुलना से पता चलता है कि जांच अवधि के दौरान चीन के मूल की संबद्ध वस्तु को भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों से कम कीमतों पर बेचा गया था। इस प्रकार यह देखा जाता है कि आयातों से घरेलू कीमतों में कटौती की जा रही थी यद्यपि जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती की मात्रा को अधिक नहीं माना गया है।

विवरण	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
पहुंच मूल्य	रु./किग्रा.	***	***	***	***
निवल बिक्री प्राप्ति	रु./किग्रा.	***	***	***	***
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	94	102	117
कीमत कटौती	रु./किग्रा.	***	***	***	***
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	23	88	38
कीमत कटौती	%	***	***	***	***
कीमत कटौती	% रेंज	10 से 15	1 से 5	10 से 15	1 से 5

51. प्राधिकारी ने संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए कीमत न्यूनीकरण, कीमत हास और कम कीमत पर बिक्री, यदि कोई हो, की भी जांच की है। जांच के पश्चात यह निर्धारित किया गया है कि संबद्ध देश से आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत और क्षति रहित कीमत से काफी कम रहा है। इस प्रकार आयातों के कारण घरेलू उद्योग को कम कीमतों पर बिक्री का सामना करना पड़ रहा था। यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में क्षति अवधि के दैरान वृद्धि हुई है परंतु यह वृद्धि घरेलू उद्योग द्वारा बेचे गए घरेलू समान उत्पाद की उत्पादन लागत में हुई वृद्धि से काफी कम है जिसके कारण कीमत हास हुआ है।

	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
बिक्री की लागत	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	101	110	128
घरेलू बिक्री कीमत	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	94	102	117

52. अतः यह निर्धारित किया जाता है कि यद्यपि लागतों में 28% तक की वृद्धि हुई, तथापि घरेलू उद्योग अपनी बिक्री कीमतों में केवल 17% वृद्धि कर सका था। इस प्रकार यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग कीमत में विधिसमत वृद्धि कर पाने में सक्षम नहीं रहा है। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला गया है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का प्रभाव प्रतिकूल और काफी अधिक रहा है।

घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदंड

53. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-॥ में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की वस्तुनिष्ठ जांच किया जाना शामिल होगा। नियमावली में आगे यह व्यवस्था है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों का वस्तुनिष्ठ और निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होना चाहिए, जिसमें बिक्रियों, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में वास्तविक और संभावित गिरावट; घरेलू कीमतों पर प्रभाव डालने वाले कारक, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह व माल सूचियों, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूँजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव की जांच शामिल होगी। घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन की जांच से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है। घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति संबंधी मापदंडों पर नीचे चर्चा की गई है।

(i) उत्पादन

54. यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन में क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है। यह नोट किया जाता है कि यद्यपि क्षति अवधि के दौरान उत्पाद की मांग में 17% की वृद्धि हुई, तथापि उत्पादन में 35% की गिरावट आई है।

	इकाई	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
क्षमता	मी.ट.	MT	400	400	400	400
उत्पादन	मी.ट.	MT	259	175	182	170
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	Indexed	100	68	70	66
मांग	मी.ट.	MT	251	257	278	294
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	Indexed	100	102	111	117
मांग का उत्पादन में %	%	%	103.11	68.06	65.20	57.99

(ii) क्षमता तथा क्षमता उपयोग

55. यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की क्षमता और क्षमता उपयोग निम्नांकित तालिका के अनुसार-घटे-बढ़े हैं। यह देखा गया है कि कंपनी द्वारा स्थापित क्षमता एक समान रही है। यह भी नोट किया गया है कि याचिकाकर्ता विचाराधीन उत्पाद के लिए समर्पित रूप से अपनी उत्पादन क्षमताओं का प्रयोग कर रहा है। यह नोट किया गया था कि यद्यपि क्षति अवधि के दौरान उत्पाद की मांग में वृद्धि हुई, परंतु उत्पादन में गिरावट के कारण क्षमता उपयोग में गिरावट आई। यह भी नोट किया गया है कि क्षमता उपयोग में गिरावट उत्पादन में गिरावट के अनुक्रम में रही है। इस प्रकार यद्यपि उत्पाद की मांग में 17% की वृद्धि हुई है, तथापि क्षमता उपयोग में 34% की गिरावट आई है।

	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
क्षमता	मी.ट.	400	400	400	400
उत्पादन	मी.ट.	259	175	182	170
क्षमता उपयोग	%	64.76	43.81	45.38	42.56
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	68	70	66
मांग	मी.ट.	251	257	278	294
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	111	117

(iii) घरेलू बिक्री

56. यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियों में क्षति अवधि के दौरान भारी गिरावट आई है। यह भी नोट किया गया है कि याचिकाकर्ता के पास कोई आबद्ध खपत नहीं है। तथापि, याचिकाकर्ता काफी निर्यात करता है। अतः पाटन के प्रभाव की जांच केवल घरेलू बिक्रियों के संदर्भ में की गई है।

	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
घरेलू बिक्री	मी.ट.	63	63	59	42
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	94	67
मांग	मी.ट.	251	257	278	294
बिक्री में मांग का %	%	25.07	24.61	21.17	14.37
में परिवर्तन					
► घरेलू बिक्री	मी.ट.		0	-4	-17
► प्रवृत्ति	मी.ट.		6	21	16

(iv) लाभप्रदता

57. घरेलू समान उत्पाद के संबंध में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता की जांच केवल घरेलू बिक्रियों के संबंध में की गई है। यह देखा गया है कि संबद्ध वस्तु के लिए घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में क्षति अवधि के दौरान काफी विकृति आई है। घरेलू उद्योग को वर्ष 2006-07 के बाद से काफी घाटा उठाना पड़ रहा है। इसके अलावा, क्षति अवधि के दौरान घाटों में वृद्धि हुई है।

	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
बिक्री की लागत	रु./किग्रा.	****	****	****	****
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	101	110	128
निवल बिक्री प्राप्ति	रु./किग्रा.	****	****	****	****
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	94	102	117
लाभ/हानि	रु./किग्रा.	****	****	****	****
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	(76)	(93)	(152)
कर पूर्व लाभ	लाख रुपए	****	****	****	****
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	(77)	(87)	(102)
व्याज पूर्व लाभ	लाख रुपए	****	****	****	****
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	(77)	(87)	(102)

(v) रोजगार तथा मजदूरी

58. घरेलू उद्योग का रोजगार और दी गई मजदूरी निम्नानुसार है :-

उत्पादकता	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
रोजगार	रुपए	***	***	***	***
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	84	72	67
मजदूरी	लाख रुपए	***	***	***	***
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	104	109	155

यह नोट किया गया है कि घरेलू विक्रियों और उत्पादन में गिरावट और लगातार कम क्षमता उपयोग के कारण रोजगार पर काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

(vi) उत्पादकता

59. घरेलू उद्योग की उत्पादकता निम्नानुसार रही थी :-

उत्पादकता	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी.ट.	4.54	3.65	4.43	4.48
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	80	97	99

यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग की उत्पादकता क्षति अवधि के दौरान लगभग समान स्तर पर बनी रही थी। इस प्रकार इस मापदंड को घरेलू उद्योग की क्षति के आंकलन के लिए संगत नहीं माना गया है।

(vii) निवेशों पर आय तथा नकद प्रवाह

60. निवेश पर आय का निर्धारण ब्याज पूर्व लाभ और उत्पाद में लगाई गई पूंजी पर विचार करके किया गया है। नकद प्रवाह पर प्रभाव का निर्धारण मूल्य हास से पूर्व लाभ परंतु ब्याज लागत के पश्चात किया गया है। यह नोट किया गया है कि लगाई गई पूंजी पर आय और नकद लाभों में क्षति अवधि के दौरान भारी कमी आई है। यह भी नोट किया गया है कि लाभ और लगाई गई पूंजी पर आय के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन और नकद लाभ इसी दिशा में रहे हैं और इन पर क्षति अवधि के दौरान काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
नियोजित पूंजी पर आय	%	***	***	***	***
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	(28)	(36)	(58)
नकद लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	(47)	(50)	(71)

(viii) मालसूची

61. यह नोट किया गया है कि वर्ष 2006-07 से क्षति अवधि के बीच मालसूची के स्तर में काफी वृद्धि हुई है। यद्यपि, क्षति अवधि के दौरान इसमें समग्र रूप से गिरावट आई है। तथापि, क्षति अवधि के दौरान माल सूची में बिक्री के दिनों की संख्या के बराबर वृद्धि हुई है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि जांच अवधि के दौरान 40% क्षमता उपयोग के बावजूद घरेलू उद्योग सबद्ध वस्तुओं को पूरी तरह से बेचने में सक्षम नहीं रहा था। घरेलू उद्योग ने आगे यह तर्क दिया है कि मांग के मौजूदा स्तर, जहां घरेलू उद्योग आसानी से 100% संयंत्र उपयोग तक पहुंच सकता था, के बावजूद पाटित कीमतों पर आयातों के कारण घरेलू उद्योग के उत्पादन और माल सूचियों पर काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
मालसूची	मी.ट.	15	12	5	12
बिक्री दिवसों की संख्या के बराबर मालसूची	दिवस	21	22	10	27

(ix) वृद्धि

62. विभिन्न मापदंडों में वृद्धि संबंधी सूचना निम्नांकित तालिका में दी गई है। यह देखा गया है कि मात्रा और कीमत दोनों मापदंडों की दृष्टि से वृद्धि ऋणात्मक रही है।

विवरण	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
वृद्धि					
उत्पादन	%		(32.35)	3.60	(6.22)
घरेलू बिक्री	%		0.64	(7.01)	(28.41)
माल सूची	%		(23.12)	(57.54)	139.24
बिक्री कीमत/किग्रा.	%		(5.64)	8.14	14.34
लागत/किग्रा.	%		1.39	8.58	16.05
आर ओ आई	%		(13.51)	(0.80)	(2.32)

(ix) पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

63. घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि वर्तमान गतिविधियों को देखते हुए जहां पिछले 5 से अधिक वर्षों से लंगातार पाटन के कारण यह उत्पाद लगातार खराब निष्पादन कर रहा है, नया पूंजी निवेश जुटाने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। यह नोट किया गया है कि विचाराधीन उत्पाद का कंपनी के समग्र प्रचालनों में काफी महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह माना जाता है कि उत्पाद के लगातार पाटन और उत्पाद में होने वाले वित्तीय घाटों के कारण घरेलू उद्योग की पूंज निवेश जुटाने की क्षमता निश्चित रूप से बुरी तरह प्रभावित होगी।

(x) पाटन तथा पाटन मार्जिन का स्तर

64. प्रतिवादी निर्यातकों और असहयोगी निर्यातकों के संबंध में ऊपर निर्धारित पाटन मार्जिन काफी अधिक है और निर्धारित न्यूनतम स्तर से अधिक है।

(xi) गंवाई गई बिक्रियां

65. घरेलू उद्योग ने विभिन्न उपभोक्ताओं की ओर से गंवाए गए ऑर्डरों की विभिन्न घटनाओं के बारे में बताया है जिन्होंने कम कीमतों पर चीन की संबद्ध वस्तु की उपलब्धता का उल्लेख किया है।

ज. कारणात्मक संबंध

66. प्राधिकारी ने इस बात की जांच की है कि क्या पाटनरोधी नियमावली में सूचीबद्ध अन्य कारकों के घरेलू उद्योग को हुई क्षति में योगदान दिये जाने की संभावना है। इस जांच में निम्नानुसार पाया गया था :

(i) तीसरे देशों से आयात

67. प्राधिकारी ने आई बी आई एस से संबद्ध वस्तु के सौदावार आयात आंकड़ों को प्राप्त किया है। रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार प्राधिकारी नोट करते हैं कि अन्य देशों से संबद्ध वस्तु के कोई खास आयात नहीं हुए थे।

(ii) मांग में कमी

68. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की मांग में क्षति अवधि के दौरान काफी सुधार प्रदर्शित हुआ है। मांग में संभावित संकुचन के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकती है।

(iii) खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन

69. विचाराधीन उत्पाद के संबंध में खपत की प्रवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और न ही इस संबंध में कोई महत्वपूर्ण आरोप लगाया गया है। अब तक हुई जांच से वैकल्पिक प्रतिस्पर्धी उत्पादों की मौजूदगी का पता चला है और संभावित क्षति ऐसे वैकल्पिक उत्पादों के कारण हो रही है।

(iv) विदेशी और घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

70. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध उत्पाद के लिए केवल एक बाजार है जहाँ चीन से पाटित आयात घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति की गई संबद्ध वस्तु से सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं। यह नोट किया गया है कि आयातित संबद्ध वस्तु और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तु समान सरतुरं है और इनका उपयोग समान अनुप्रयोगों/अंतिम प्रयोगों में किया जाता है। व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाओं और विदेशी उत्पादकों तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा का ऐसा कोई साक्ष्य नहीं मिला है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो।

(v) प्रौद्योगिकी विकास

71. प्रौद्योगिकी में विकास का कोई आरोप नहीं लगाया गया है और न ही अब तक हुई जांच से ऐसा प्रदर्शित हुआ है कि घरेलू उद्योग को हुई संभावित क्षति प्रौद्योगिकी में विकास के कारण हो सकती हो।

(vi) निर्यात निष्पादन

72. याचिकाकर्ता भारी मात्रा में निर्यात करता है। तथापि, प्राधिकारी ने केवल घरेलू प्रचालनों और घरेलू लाभप्रदता पर विचार किया है। इसके अलावा, अनंतिम रूप से यह निर्धारित किया है कि जांच अवधि के दौरान प्रति इकाई निर्यात कीमत घरेलू बिक्री कीमत से 17% अधिक रही थी।

(vii) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

73. घरेलू उद्योग की उत्पादकता में कोई वार्तविक परिवर्तन नहीं हुआ है। उत्पादकता में किसी संभावित कमी के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकती है।

पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन का स्तर

74. पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन के स्तर को निम्नानुसार निर्धारित किया गया है। इस प्रकार यह नोट किया जाता है कि इन स्तरों को काफी अधिक माना गया है।

	इकाई	यिघाई	अन्य
पाटन मार्जिन	अम.डॉ./किग्रा.	****	****
पाटन मार्जिन	%	9.23	28.14
	रु./किग्रा.	****	****
निवल बिक्री कीमत	रु./किग्रा.	43.46	43.46
परिवर्तित दर	अम.डॉ./किग्रा	****	****
निवल बिक्री कीमत	अम.डॉ./किग्रा	****	****
क्षति मार्जिन	%	****	****
क्षति मार्जिन	% (रेंज)	4-8	20-25

झ क्षति तथा कारणात्मक संबंध से संबंधित निष्कर्ष

75. चीन जन.गण. से पाठित आयातों की मात्रा में समग्र स्तर पर और भारत में संबद्ध वस्तु की मांग के संबंध में भी भारी वृद्धि हुई है। यह नोट किया गया है कि पाठित आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई है। संबद्ध देश से पाटन मार्जिन को अनंतिम रूप से निर्धारित किया गया है और उसे अत्यधिक माना गया है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री मात्राओं और क्षमता उपयोग में गिरावट आई है और घरेलू उद्योग की मालसूची में वृद्धि हुई है। इस प्रकार संबद्ध देश से पाठित आयातों में प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव-प्रदर्शित होता है। यह भी नोट किया गया है कि पाठित आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती की जा रही थी। यद्यपि, कटौती मार्जिन कुछ खास नहीं रहा है। अनंतिम रूप से यह माना जा सकता है कि घरेलू उद्योग अपनी बिक्री कीमतों को चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के आयातों की पहुंच कीमत के निकट लाने का प्रयास कर रहा था। इसके अलावा, यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग उत्पादन लागत में हुई वृद्धि के अनुपात में अपनी कीमतों में वृद्धि करने में सक्षम नहीं रहा है और घरेलू उद्योग को अपने उत्पाद को क्षतिरहित कीमत से कम कीमत पर बेचने के लिए बाध्य होना पड़ा है। इस प्रकार कम कीमत पर बिक्री और कीमत ह्रास के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को लाभ, निवेश पर आय और नकद लाभों में भारी गिरावट का सामना करना पड़ा है। इस प्रकार यह निर्धारित किया जाता है कि पाठित आयातों के कारण कम कीमत पर बिक्री और कीमत ह्रास की दृष्टि से काफी प्रतिकूल कीमत संबंधी प्रभाव पड़ा है जिसके चलते लाभ, निवेश पर आय और नकद लाभों में भारी विकृति आई है।

76. रिकॉर्ड में उपलब्ध सामग्री के अनुसार प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति से संबंधित विभिन्न क्षति मापदंडों से संचयी और सामूहिक रूप से यह सिद्ध होता है कि उक्त क्षति संबद्ध देश से हुए पाठित आयातों के कारण हुई है।

ज. निष्कर्षः

77. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों और उनमें उठाए गए मुद्दों की जांच करने के बाद; और रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों में विचार करने के पश्चात् प्राधिकारी यह मानते हैं कि अनन्तिम रूप से इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि;

(क) संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद का भारत में निर्यात सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है।

(ख) संबद्ध देश से संबद्ध आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वारस्तविक क्षति उठानी पड़ी है।

(ग) यह वारस्तविक क्षति संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण हुई है।

ट. भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे

78. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य सामान्यतः पाटन की अनुचित व्यापार पद्धतियों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को बहाल किया जा सके, जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देशों से आयातों पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं लगेगा; अतः उपभोक्ताओं के लिए उन उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

79. यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध वस्तुओं के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामतः इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपायों द्वारा भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में कगी नहीं आएंगी खासकर तब जबकि पाटनरोधी शुल्क की राशि को घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए आवश्यक राशि तक सीमित रखा जाएगा। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से पाटन के व्यवहार द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का हास रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी।

ट. सिफारिशें

80. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरूआत कर उसकी सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को दी गई थी और निर्यातकों, आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के पहलुओं के बारे में सूचना प्रदान करने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। पाटनरोधी नियमों के अनुसार पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में जांच शुरू करने के बाद तथा संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में सकारात्मक पाटन मार्जिन एवं ऐसे पाटित आयातों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई वारस्तविक क्षति और उसके खतरे की सकारात्मक पुष्टि करने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि इस मामले में

पाटन एवं क्षति को समाप्त करने के लिए निश्चयात्मक शुल्क लगाया जाना अपेक्षित है। अतः प्राधिकारी यह आवश्यक समझते हैं और संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों पर नीचे उल्लिखित प्रक्रिया और तरीके से निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं।

प्राधिकारी द्वारा अपनाए जाने वाले कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन जो भी कम हो, के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके। तदनुसार चीन जन.गण. के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर निम्नलिखित तालिका के कालम 8 में उल्लिखित राशि और पहुंच मूल्य के बीच के अंतर के बराबर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

क्र. सं.	संप-शीर्ष	वस्तु विवरण	उदागम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
-1	-2	-3	-4	-5	-6	-7	-8	-9	-10
1	2932.21	सभी प्रकार के कुरोरिन	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	विधाइ (कांगड़ा) एरोमा कैमिकल कं. लि.	विधाइ (कांगड़ा) एरोमा कैमिकल कं. लि.	14.02	किग्रा.	अम. डा.
2	- वही -	- वही -	चीन जन.गण	चीन जन.गण	उत्पादक तथा निर्यातक के उपरोक्त क्र. सं. से इतर अन्य कोई रायोजन	14.02	किग्रा.	अम. डा.	
3	- वही -	- वही -	चीन जन.गण	चीन जन.गण से इतर अन्य कोई देश	कोई	कोई	14.02	किग्रा.	अम. डा.
4	- वही -	- वही -	चीन जन.गण. से इतर अन्य कोई देश	चीन जन.गण	कोई	कोई	14.02	किग्रा.	अम. डा.

इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3, 8, 1, 9 और 9 के अंतर्गत लागू शुल्कों को छोड़कर सीमाशुल्क के सभी शुल्क होंगे।

81. उपर्युक्त के अधीन रहते हुए प्राधिकारी दिनांक 29 जनवरी, 2010 के प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।

82. केन्द्र सरकार द्वारा इन जांच परिणामों को स्वीकार किए जाने के बाद इनके खिलाफ कोई अपील वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क टैरिफ नियमावली, 1995 के अनुसार, सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण (सेस्टेट) में दायर की जा सकेगी।

पी. के. चौधरी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 7th July, 2010

Final Findings

Subject: —Anti-Dumping Investigations concerning imports of coumarin originating in or exported from China PR—Final Findings.

F. No. 14/17/2009-DGAD.—Whereas the Designated authority, having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time, (hereinafter referred to as the Rules);

BACKGROUND

1. Whereas the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority), having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Antidumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 as amended from time to time, (herein after referred to as the Rules) received an application from M/s Atlas Fine Chemicals Pvt. Limited, Nasik, Maharashtra through M/s. TPM Solicitors & Consultants, New Delhi (hereinafter referred to as the Applicant) alleging dumping of Coumarin (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from China PR (hereinafter referred to as subject country) and requested for the initiation of Anti Dumping investigations for levy of anti- dumping duties on the subject goods.

2. And whereas the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry, after examination of the same with regard to adequacy and accuracy, issued a Public Notice dated 10th July, 2009 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods originating in or exported from the subject country in accordance with the Rule 6 (1) of the Rules to determine the existence, degree, and effect of alleged dumping and to recommend the amount of Anti Dumping Duty, which, if levied, would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

3. And whereas the Designated Authority having regard to the Act and Rules investigated and recommended imposition of provisional Anti Dumping Duty on imports of Coumarin (hereinafter referred to as subject goods) falling under Chapter 29 (Organic Chemical) of the Customs Tariff Act, 1975 (51 of 1975) originating in or exported from China PR, vide Preliminary Findings dated 29th January, 2010 and Provisional Anti Dumping Duty was imposed on the subject goods vide Customs Notification No.38/2010-Customs dated 23rd March, 2010.

A PROCEDURE

4. The procedure described below has been followed:

- (i) The Authority notified to the Embassy/Trade Representative of subject country in India about the receipt of application alleging dumping of subject goods made by the Applicant before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;
- (ii) The Authority sent copies of the Initiation Notification dated 10th July, 2009 to the Embassy/Trade Representative of the subject country in India informing about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6 with a request to advise the exporters/ producers of the subject country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter and questionnaire sent to the exporters/producers and Non-Confidential Version of the application was also sent to them, along with the names and addresses of the known exporters from the subject country as per the addressees made available by the applicant.
- (iii) The Authority sent copies of Initiation Notification dated 10th July, 2009 along with non-confidential version of the application as well as exporter's questionnaire to the known producers/exporters of the subject country as per the addresses made available by the applicant and requested them to provide relevant information and make their views known in writing within 40(forty) days of initiation notification.
- (iv) The Authority also sent copies of the Initiation Notification dated 10th July, 2009 along with importer's questionnaire to the known importers and domestic industry as per the addresses made available by the applicant and requested them to provide relevant information and make their views known in writing within 40(forty) days of the initiation notification.
- (v) The applicant requested the Authority to treat China PR as a non-market economy country for the purpose of present investigations. The Authority informed the known Producers/exporters from China PR that it proposes to examine the claim of the applicants in the light of para (7) & (8) of Annexure-I of the Rules as amended. The concerned exporters / producers of the subject goods from China PR were therefore advised to furnish necessary information/sufficient evidence, as mentioned in subparagraph (3) of paragraph 8 to enable the Authority to consider whether market economy treatment should be granted to the cooperating exporters/producers who could

demonstrate that they satisfy that market conditions prevail in their case.

(vi) The Authority sent questionnaire, to elicit relevant information to the following known exporters in subject country in accordance with Rule 6(4):

- (1) Tianjin City No. 3 Chemical Reagent factory, Xuzhuangzixiang, Dongli District, Tianjin – 300 240.
- (2) Nanjing Huafa Chemical Co. Ltd. Meishan, Zhongliuamenwai, Jiangning County , Nanjing City Jiangsu – 210 039.
- (3) Changzhou No. 2 Chemical Plant, 16, Changqi Rd., Qishuyan, Changzhou City, Jiangsu – 213 003.
- (3) Doumen County Baishifa, Chemical Factory Co., Ltd. Doumen Town, Doumen County, Zhuhai City, Guangdong – 519.

(vii) In response to the Initiation Notification the following exporters/producers from the subject country have responded to the questionnaire.

- (1) Yinghai (Cangzhou) Aroma Chemical Co., Ltd.
- (2) Jiangyin Baihui Fragrance Co. Ltd.

(viii) A questionnaire was sent to the known importers/user associations of the subject goods for necessary information in accordance with Rule 6(4). In response to the above notification none of the importers/interested parties filed their submissions.

(ix) The preliminary findings was issued on 29th January 2010 and a copy of the same was sent to the all the interested parties for their comments. A copy of the same was also put on the website simultaneously for information to all concerned. However, no reply was received from any interested parties within given time limit. Subsequent to the preliminary findings and public hearing, a letter was received from M/s Fragrance and Flavours Association of India wherein they stated that they had not been named as known association by the applicant and hence they and members of the association who are also importers and users have not been able to give their views as they did not receive the copy of the Public Notice. They also stated that the members of the association have not received the importers questionnaire and have not been able to give their views. The matter has been examined and it is noted that the Authority at the stage of initiation of investigation wrote to the known parties including importers listed in the application for seeking response to the questionnaire. Further, initiation of investigations and preliminary findings were notified in the Gazette of India and was made known to all interested parties and a copy of the same was put up on the website for information to all interested parties. However, none of the importers or consumers responded to the Authority at the stage of initiation or Preliminary findings and public hearing. The Authority therefore is unable to accept the argument of the association with regard to

reasons for its inability to respond to the present investigations and participate in the present investigations. Notwithstanding the legal position in this regard, the Authority considered the request of the association and addressed the association and importers asking them to give information in the form and manner of importers questionnaire. It is noted that none of the importers except one has responded to the letter from the Authority. It is noted that response has been received from M/s Kanrnataka Aromatics which is also grossly deficient. None of the information in the form and manner prescribed in importers questionnaire has been provided by the company. The importer has merely provided details of 4 import transactions from M/s Jiangyin Baihui Fragrance Co. Ltd., which has been examined by the Authority. No response was received within the given time frame from any other interested party. As anti dumping investigations are time bound, further request for extension from the above mentioned association was not granted.

(x) A request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of the subject goods made in India during the past three years and the period of investigation. The information received from DGCI&S was analyzed and the same was compared with the information received from the IBIS (secondary sources). After the detailed examination, it was decided to take into account the information from IBIS as it had reported higher volumes of subject goods.

(xi) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7). A copy of the non-confidential application was also provided to other interested parties, as requested.

(xii) The Authority has verified the information furnished by the Domestic Industry to the extent possible to examine the injury suffered and to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the applicants so as to ascertain if Anti Dumping Duty lower than the Dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.

(xiii) In accordance with Rule 6(6), the Authority also provided an opportunity to all interested parties to present their views orally in a Public Hearing held on 10th March, 2010. The interested parties who presented their views in the Public Hearing were requested to file their written submissions of the views expressed orally latest by 17th March, 2010 and to submit their rejoinders latest by 24th March, 2010.

(xiv) **** in this final findings represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority on merits under the Rules.

(xv) The Period of Investigation for the purpose of the present investigation is 1st January, 2008 to 31st December, 2008 (12 months). The examination of the trends in the context of injury analysis covers the period from 2005-06, 2006-07, 2007-08 and the Period of Investigation.

(xvi) The Authority provided opportunity to the importers/ industrial users of the product under consideration to furnish information considered relevant to the investigation regarding dumping, injury and causality. In accordance with Rule 16 of Rules Supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties on 21st June 2010 and comments received thereon have also been duly considered in the findings.

(xvii) The Authority in this case has considered the data relating to sale's price and costing as confidential as the disclosure of the same may give the undue competitive advantage to the other interested parties. The data relating to volumes of domestic industry has not been treated as confidential.

(xviii) Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded these findings on the basis of the 'facts available'.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

5. The product under consideration in the present investigation is Coumarin of all types (hereinafter referred as "subject goods"). Coumarin (Chemical Formulae C₉H₆O₂) belongs to the lactone family of chemicals. It is an aroma chemical, which can be in the form of white crystals, flake or powder. It has characteristic odour of newly mown hay and bittersweet somewhat similar to vanilla. Coumarin is used in the preparation of fragrance compounds and those fragrance compounds are used in the production of soaps, detergents, cosmetics, incense sticks, and fine fragrances. It imparts pleasant fragrance and masks unpleasant odors in many other household and industrial products. Coumarin, which was originally a natural product obtained from Tonka beans is now produced synthetically. It can be obtained by two synthetic processes i.e. (i) Starting from phenol to obtain Salicylaldehyde followed by Perkin reaction and (ii) Starting from Ortho-cresol which is also called Raschig method in which Salicylaldehyde is made from Ortho-cresol and then converted into Coumarin. In both the processes Salicylaldehyde and Acetic Anhydride react in the presence of Sodium Acetate in Acetic Acid as catalyst and crude Coumarin is separated from Acetic Acid by distillation. The crude Coumarin is further purified by several distillations and then crystallized in Methanol. The crystallized product is separated by centrifugation and dried. The main physical specification of Coumarin is its purity, for which the melting point is the indicator.

6. The product is classified under Chapter 29 (Organic Chemical) of the Customs Tariff Act under Customs Sub-heading No. 2932.21.00. However, customs classification is indicative in nature and not binding on the scope of the investigations.

7. None of the interested parties made any submissions regarding the product under consideration at any stage of the proceedings. The Authority therefore confirms the product under consideration as considered in the preliminary findings and as mentioned in Para 5 as above.

C. Like Article

8. With regard to like article, Rule 2(d) provides as under:-

"like article" means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation;

9. The applicant has claimed that there is no known difference in the product under consideration produced by the Indian industry and exported from subject country. The product under consideration produced by the Indian industry and imported from subject country are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.

10. The Authority notes that none of the interested parties have raised any argument in relation to product under consideration and like article. The Authority after due consideration of the submissions made by the interested parties, therefore, holds that the subject goods produced by the domestic industry is like article to the subject goods imported from subject country in accordance with the AD rules for the purpose of the present investigation.

D. Domestic Industry and Standing:

11. The petition has been filed by M/s. Atlas Fine Chemicals Pvt. Limited, as the domestic industry. Apart from the applicant, there were two other producers of the subject goods in India, who have closed their commercial production. Accordingly, the applicant accounts for the 100% of the Indian production during the period of investigation. The Authority notes that none of the interested parties have disputed this claim.

12. The Authority holds that the M/s Atlas Fine Chemicals Pvt. Ltd is the sole producer of the like article in India and constitutes 'domestic industry' within the meaning of the Rule 2(b) of the AD Rules.. The Authority further holds that the application satisfies the requirements of Rule 2(b) and Rule 5(3) of the AD Rules.

E. Other submissions and issues raised

E1 Submissions by domestic industry

13. The following are the post hearing submissions made by the domestic industry:

- 1) There is a long history of dumping of the subject goods from China PR. In fact, the dumping in United States of America has led to the closure of plant and in European Union is now likely to lead to plant closure.
- 2) It is not established by the Chinese producers on evidentiary basis that Authority can grant them market economy treatment. Rather, their own response states that their accounts are unaudited. Also, the information sought by the Authority in the preliminary findings has not been provided by the exporters. Rather, Chinese producers have misguided the Authority by not revealing their relationship with the State. Therefore, preliminary findings should be maintained in this regard.
- 3) The dumping margins (3.46% and 9.23%) determined by the authority are too low.
- 4) The claims of the export price made by the Chinese exporters does not corroborate with the prices reported to Indian Customs. Hence, unless the export price claims are corroborated with the Indian Customs data, the claim of export prices would remain wholly inadmissible.
- 5) The VAT Invoice is the only authentic document which the exporter can provide to establish price at which the goods were exported. However, VAT invoice is the invoice presented to Chinese Customs and is not the invoice presented to the Indian Customs.
- 6) The invoice presented to Indian Customs is the Commercial Invoice. However, the commercial invoice presented to Indian Customs is not presented to China Customs. Thus, possibilities of Commercial invoice and VAT invoice not getting corroborated are not ruled out.
- 7) Given the limited number of transactions in this case, it is vital to corroborate the claims made by the exporter that the data compiled and consolidated by IBIS and DGCI&S. In case of the significant differences in the prices now claimed by the exporter and the prices reported to Customs, the prices reported to the Customs can only be relied upon for determining export prices.
- 8) The issue of difference in the exporter's claims and the Indian Customs reports had been adequately brought before the Designated Authority in past number of investigations. Consistent position applied by the Designated Authority in such cases is to adopt prices declared to Indian Customs. Petitioner requested the Designated Authority to refer the matter to DRI as well for further investigations.
- 9) Normal value determined (around US\$ 12.75) is too low. In this respect, the constructed normal value is the last resort under the law. Petitioner has provided the information on (a) prices in Europe and (b) Import prices from Europe.
- 10) In the present case and in past few cases, the Designated Authority has considered the Cess on customs duty for determining landed price of imports. It is, however, noted that whereas the outstanding issue of inclusion of excise duty has remained outstanding, the interested parties have misled the authority in selectively addressing the issue of Cess.
- 11) Injury margin should be determined inclusive of the excise duty, Cess and Commission.

- 12) Returns should be determined considering the gross fixed assets. 22% return is too low. In any case, revaluation of assets should not be ignored. If depreciation is to be accounted for, appreciation of assets must also be counted for.
- 13) Post period of investigation, the volume of subject goods increased from the subject country whereas the prices declined. (e.g. our India export below only)
- 14) There is a past history of circumvention of duties by the Chinese exporters. The Designated Authority may specify in the operative part of the order that the investigations have shown that the goods are not being produced in any country other than China, India and Europe. This is most vital in order to prevent circumvention of anti-dumping duties. (Issue यह बोर्ड ने इनकम एवं एक्सप्रेस का नियमित)
- 15) In order to ensure that the said duty is not circumvented by over-invoicing the value, petitioner submits that the DA may specify minimum amount of duty that should be charged, irrespective of the import prices i.e., the benchmark form of duty.
- 16) There is disparity between the finance notification and the notification of the Ministry of Commerce. The Ministry of Finance has modified the definition of landed price of imports while implementing the recommendations of the Designated Authority. The result of this modification is reduction in protection to the domestic industry.
- 17) In reply to the disclosure statement, the domestic industry has reiterated the submissions made earlier by them to the Authority. In addition, they have pointed out the disparity between the finance notification and ministry of commerce notification in the definition of landed value. They have pointed out that the result of this modification is less than recommended protection to the domestic industry. They have requested the Authority to address this issue. Further, they have pointed out significant decline in prices of subject goods by significant imports in Post investigation period and continued circumvention of duties. They have requested the Authority to address these issues.

E2 Submissions made by exporters, importers and Association

14. The following are the post hearing submissions made by the exporters and post disclosure comments by Fragrance and Flavours association of India:

- 1) Due to the significant variation in exchange rate in POI, the calculation of landed value by adopting single exchange rate is incorrect.
- 2) DA has erred in considering the 7.5% customs duty for the calculation of landed value.
- 3) 3% Surcharge on the customs duty has not been considered for the calculation of landed price of imports.
- 4) NIP is based on 'inflated' rate of return. Granting of 22% return is incorrect and unreasonable.
- 5) The lesser duty rule Proposal to WTO considers reasonable return based on the capital employed as the last option to calculate NIP.
- 6) Actual rate of interest should be adopted as domestic industry has never earned such high rates of return.
- 7) Landed value of exports made by the exporters is above or almost equal to the NIP.
- 8) DA should verify the claim of Normal value and Export price calculation provided by the exporters for the correct assessment.

Arguments raised by the Association

- 9) Coumarin is used for making Agarbathi. There are three manufacturing associations having around 2000 members who are mostly small and medium sized manufacturers who would be affected to a large extent due to exorbitant levy of ADD. There is only one manufacturer of Coumarin in India who may not be able to meet the demand of the industry. ADD has resulted in monopoly of the sole Indian manufacturer who in return has increased the price of coumarin to Rs 30/- per KG from June 2010 i.e. immediately after levy of ADD. Soaps & Detergent and Cosmetics & Toiletries industry which uses Coumarin as a raw material is majorly catered by small and medium sized manufacturers which are largely affected by increase in the price of the raw material (coumarin) due to imposition of ADD.
- 10) Agarbathi which is now under cottage industry mainly employ rural women and also agarbathi is largely exported. Imposition of ADD will increase the cost of raw material which in turn would effect rural employment as well as foreign exchange which is earned through exports. Instead of imposing ADD, the sole manufacturer of Coumarin should be encouraged to enhance the capacity to meet the demand at a lesser cost owing to the fact that the labour cost in India is lower than China and sell the product at competitive price.

E.3 Examination by the Authority:

15. The above submissions have been analysed as follows:

- a) With regard to variation in the Exchange Rate, the Authority notes that for determination of dumping margin, the Authority has considered exchange rate prevailing at the time of exports. However, in line with consistent practice followed by Authority, variation in the exchange rates have not been taken into account for determination of injury margin.
- b) The producers/exporters have disputed the customs duty considered by the Authority for determining injury margin. It is clarified that customs duty during the relevant period was 7.5%. Further, the Authority has added 3% surcharge for calculation of landed price of imports.
- c) The producers/exporters have disputed the determination of non-injurious price and grant of 22% return for determining reasonable profit. The Authority considers that it is the consistent practice of the Authority to grant 22% return on capital employed for computing profits. Further, As regards the proposal before WTO, the Authority notes that the proposal under consideration before WTO cannot be treated as legal obligation for the Authority for the present determination.
- d) The exporter has claimed that landed price is quite comparable to non-injurious price. The Authority, however, notes that the difference between the two is significant.

- e) With regards to the determination of the export price and landed value of subject goods from China PR, the Authority noted the arguments submitted by the domestic industry that the export price claimed by exporters should not be admitted unless these claims are corroborated by the prices reported to Indian customs. In line with the consistent practice, on site verification was conducted at the premises of the responding Producers/exporters in China PR. Meanwhile, the authority examined the import data received from DGCI&S and the data procured by the Authority from Customs Port Authority. The domestic industry also provided a statement showing imports into India and the name of the importers and exporters concerned. The Authority on the basis of examination of the data notes that there is significant difference in the values reported to the Indian customs and data made available by responding importer and to the Designated Authority. As the import values reported to Indian Customs and responding importer are significantly lower and further since significant imports have been cleared at these prices, the export prices claimed by the concerned exporters were closely examined with reference to prices reported in the Customs Port data. Further, during the verification visit, the concerned exporters were specifically asked to justify their claim of export price based on credible evidence. As has been noted in the para relating to dumping margin, one of the major responding Producer/exporter has not been able to prove to the Authority about its export prices with credible evidence. In view of significant variation in the export prices, the Authority considered it appropriate to rely upon to the data made available by Indian Customs Port Authority and Indian importer in all these transactions where there was significant difference in import value.
- f) On the issue of determination of normal value on the basis of prices of the product in a market economy third country or prices from such third countries to other countries including India, the matter has been examined in detail in the para pertaining to determination of normal value.
- g) With regard to the claim of the domestic industry to include Excise Duty, Cess and Commission for the purpose of determining of injury margin, the Authority reiterates its consistent practice that the Excise Duty is not required to be considered for the reason that the amount of Excise duty is the same as the amount of additional duty of Customs leviable on imports. With regard to the Commission, the Authority determined non-injurious price at level without including commission. Further, there is no evidence on record that commission has been paid by the exporter to an Agent in India. Commission paid to an exporter outside India is not relevant for the purpose.
- h) The domestic industry has requested for re-determination of non-injurious price and has requested for determination of reasonable profit after considering apportionment of selling general and administrative expenses and working capital between domestic and exports in the ratio of turnover is incorrect. The Authority, however, holds that the non-injurious price has been determined on the consistent basis adopted by the Authority.
- i) With regard to import data for the period subsequent to the period of investigation, the Authority notes that the import data/information only for the period of investigation is required to be considered for the present investigation. It would not be appropriate to consider any information for the period subsequent to the period of investigation.

j) The domestic industry has also pointed out that the notification issued by the customs includes a special additional duty of Customs under the definition of landed price of imports, whereas the Authority specified the same excluding special additional duty of customs. The matter has been considered and, as recommended earlier in the preliminary findings, it is noted that the landed value does not include special additional duty of customs in the final findings. The same is being recommended to Ministry of Finance.

16. The Authority has duly considered various submissions and issues raised by various interested parties during the course of investigation. The Authority notes that the investigations are being conducted in accordance with the Act and Rules made therein as referred above. Further, the Authority has relied upon "positive evidences" made available by the interested parties during the course of investigations. The Authority notes that in case an interested party has advanced arguments without providing positive evidence and where it is not possible to verify the authenticity and correctness of the argument from public sources, it is not possible to accept such arguments. Subsequent to the issuance of disclosure statement, comments have been received from domestic industry and Fragrance and Flavours association of India.

(i) Some interested parties, in their comments to disclosure statement, argued that the petitioner is the sole producer of the product under consideration in India. The matter has been examined and it is noted that the petitioner in its relevant part, has stated that there are two more producers of the product under consideration in India who have suspended production. In any case, under the rules, the Authority is required to consider whether the petitioner satisfies standing and constitutes domestic industry. Even if the petitioner is the sole producer of the product under consideration in India, the same does not prevent it from seeking relief under the dumping rules.

(ii) With regard to the argument concerning price increase in the post period of investigation period, the Authority notes that the investigation has shown that the petitioner was suffering financial losses due to dumping. In case the domestic industry increases the prices unreasonably, the consumers would be free to request review of current anti-dumping duties. The same holds good for the domestic industry who have submitted that subject goods at much lesser price than prevailing during the POI has been entering into India in substantial volumes.

(iii) With regard to alleged impact of imposition of anti-dumping duties on consumers, increase in the cost of eventual product and employment, the Authority notes that no quantified information has not been provided by the Association. Further, the purpose of anti-dumping duties is to prevent dumping causing injury to the domestic industry.

(iv) With regard to customs duty that is already been paid on imports (and which is providing relief to the domestic industry), the Authority notes that the injury to the domestic

industry has been determined after adding the prevailing custom duties. The current injury is therefore after including the protection of customs duty granted to the domestic industry.

(v) The interested parties have argued that the 'domestic' industry cannot meet the Indian demand. The Authority notes that the demand for the product under consideration during the POI was about 294 MT and was at the highest level. Domestic industry itself has a capacity of 400 MT. The domestic industry alone should be in a position of meet the entire Indian demand. However, it is also noted that ability to meet the domestic demand is not an essential pre-requisite for seeking protection from dumped imports.

(vi) On the issue of subject goods being produced in limited countries, it is noted that the domestic industry has argued that the subject goods are produced only in China, India and France. The domestic industry has also brought to the notice of the Authority circumvention proceedings undertaken by European Commission. It is noted by the Authority that none of the other interested parties have disputed the claim of the domestic industry in this regard.

F. Methodology for calculation of dumping margin

F.1 Determination of Dumping Margin in case of China PR

17. The Authority notes that in the past three years China PR has been treated as non-market economy country in the anti-dumping investigations by other WTO Members. Therefore, in terms of Para 8(2) of the annexure I of AD rules, China PR has been treated as a non-market economy country subject to rebuttal of the above presumption by the exporting country or individual Producers/Exporters in terms of the above Rules for the purposes of preliminary determination.

As per Paragraph 8, Annexure I to the Anti-Dumping Rules as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub-paragraph (3) in Paragraph 8 and prove to the contrary. The cooperating exporters/producers of the subject goods from People's Republic of China is required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:

- (a). The decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;

- (b). The production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in

relation to depreciation of assets, other write-offs, barter, trade and payment via compensation of debts;

(c). Such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and

(d). The exchange rate conversions are carried out at the market rate.

NORMAL VALUE

F.2. Market economy treatment claim, analysis and findings

19. The following two producers/exporters from the China PR have responded and filed their responses.

1. M/s Jiangyin Baihui Fragrance Co. Ltd.
2. M/s Yinghai (Cangzhou) Aroma Chemical Co., Ltd.

Jiangyin Baihui Fragrance Co. Ltd.

20. M/s Jiangyin Baihui Fragrance Co. Ltd. China PR filed a questionnaire response and MET response in this matter as a producer and exporter of the subject goods. After examination of the responses, the Authority sought certain additional information by way of deficiency letter as noted in the preliminary findings. Subsequent to the preliminary findings, the concerned Producer/Exporter submitted reply to the deficiency letter and also consented to onsite verification of its claims regarding market economy treatment.

21. During the on site verification, response to the MET questionnaire's response was examined. It is recalled that M/s Baihui had claimed market economy treatment and had requested the authority to take into account domestic selling prices for the purpose of determination of normal value. During the verification process the concerned producer was advised to substantiate along with relevant document as to how they meet the various criteria relating to para 8 of the Annexure – 1 of the anti-dumping rules which relates to grant of market economy treatment. However, the producer/ exporter declined to submit these documents to the investigation team. In addition, the subject exporter/ producer informed that the documents relating to market economy claims are almost not available and accordingly the same cannot be provided to the verification team. Hence, in view of this, the Authority is unable to examine the claim of the producer/exporter with regard to market economy status and determined the normal value for the responding producer exporter as per para 7 of the Annexure 1 of the Anti dumping rules.

Yinghai (Cangzhou) Aroma Chemical Co., Ltd. (M/s Yinghai)

22. M/s Yinghai (Cangzhou) Aroma Chemical Co., Ltd. filed a questionnaire and market economy treatment response as a producer and exporter of the subject goods. Certain

additional information was sought with respect to incomplete information provided in response. Subsequent to the preliminary findings, the concerned exporter submitted reply to the deficiency letter and also consented for onsite verification of its claims regarding market economy treatment and export prices.

23. During the on site verification, the response to the exporter's questionnaire and the market economy treatment questionnaire's response was taken up for examination. In the response to the MET questionnaire, M/s Yinghai had claimed market economy treatment and had requested the authority to take into account domestic selling prices for the purpose of determination of normal value. During the verification process the concerned producer was asked to substantiate along with the document as to how they meet the various criteria relating to para 8 of the Annexure – 1 of the anti-dumping rules which relate to grant of market economy treatment. However, the producer and exporter declined to submit these documents to the investigation team. In addition, the subject exporter and producer informed that documents relating to market economy claims are almost not available and accordingly the same cannot be provided to the verification team. Hence, in view of this, The Authority determined the normal value for the responding producer/ exporter as per para 7 of the Annexure 1 of the Anti dumping rules.

EXPORT PRICE

F.3 Determination of Export Price

M/s Jiangyin Baihui Fragrance Co. Ltd (Baihui)

24. M/s Jiangyin Baihui Fragrance Co. Ltd. China PR filed a questionnaire response as a producer and exporter of the subject goods. After examination of the responses, the Authority sought certain additional information by way of deficiency letter as noted in the preliminary findings. Subsequent to the preliminary findings, the concerned exporter submitted reply to the deficiency letter and also consented for onsite verification of its claims regarding market economy treatment and export prices.

25. Subsequent to the preliminary findings, the exporters data were verified by the Authority during onsite verification at the premises of the subject producer exporter. During the verification process, the appendix wise response to the exporters questionnaire were taken up for examination. It is recalled that before the verification visit, the subject producer exporter had been given the list of the documents along with their originals prior to the verification visit to keep them ready. It included documents from the invoice to the payment received from the Indian importers through normal banking channel. The subject producer/exporter was also asked to keep ready the original VAT register and VAT invoices which are used for getting the refunds from the Chinese Customs. The subject producer exporter showed the sales invoices of the 17 transactions that have been reported in the Appendix 2. Apart from the sales invoices the subject producer/exporter also showed the sales contract, packing list, bill of lading. The subject producer/exporter then was

specifically asked to bring the original document relating to payment of export proceeds from the Indian importers through normal banking channels. They were also asked to explain why the large number of other export transactions made by them to the Indian importers during the period of investigations were not reported by them in the appendix 2. A detailed verification report in this regard was sent to the concerned exporter for his comments. In reply to the verification report, the exporter concerned has resubmitted that they have given all their shipments details in their response and has submitted credit advice in respect of their shipments. However, it is noted that said exporter has not been able to present the details of the payment received from Indian importers through normal banking channels and also not been able to present or corroborate the export prices with original records (including original VAT register) and export volumes with Indian Customs Port and data made available by responding Indian importer. Further, the said exporter was also not able to comment why many of the export transactions from them as appearing in Indian port records or information received from Indian importer are not being reflected in their records.

26. In view of the above, the Authority has not accepted the said producer/exporter's data for the purpose of determination of export price. Therefore, no separate dumping margin has been determined for M/s Jiangyin Baihui Fragrance Co. Ltd.

Yinghai (Cangzhou) Aroma Chemical Co., Ltd (Yinghai)

27. M/s Yinghai (Cangzhou) Aroma Chemical Co., Ltd. has filed a questionnaire and market economy treatment response as a producer and exporter of the subject goods. Certain additional information was sought with respect to incomplete information provided in the appendix 8, difference in raw material consumption in various appendices, basis of allocation between product under consideration and other products and an explanation to the discrepancy in the share holding of the company. Subsequent to the preliminary findings, the concerned exporter submitted reply to the deficiency letter and also consented for onsite verification of its claims regarding market economy treatment and export prices.

28. Subsequent to the preliminary findings, the exporters data was verified by the Authority during onsite verification at the premises of the subject producer exporter. During the verification, the appendix wise response to the exporters questionnaire were taken up for examination. It is recalled that before the verification visit, the subject producer exporter had been given the list of the documents along with their originals prior to the verification visit to keep them ready. It included documents from the invoice to the payment received from the Indian importers through normal banking channel. The subject producer/exporter was also asked to bring the original VAT register which is used for getting the refunds from the Chinese Customs. During verification, the producer/ exporter produced the original records of the VAT invoices including their records as kept in their register and also original records relating to payment received by them from Indian importers through normal banking channels. In fact, their data was also corroborated with the import information received from Indian Customs Port. Thereafter, a verification report was sent to producer exporter for their comments. However, no comments have been received from them till date.

29. In view of the above, the Authority has accepted the data submitted by the producer/exporter and verified subsequently by the Authority for determination of export price and dumping margin.

F2 . Determination of Normal Value

30. In the preliminary findings, the Authority had determined normal value based on any other reasonable basis in line with para 7 of Annexure -I of the Rules. The domestic industry, however, disputed the same and claimed that since normal value on the basis of price in a market economy third country or price from such third countries to India are available, the same should be given preference over "any other reasonable basis".

31. The matter has been examined and it is noted that the Chinese producers have not been able to establish that they are entitled for market economy treatment. In this connection Para 7 of Annexure I of the Rule provides that

"In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis if the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, I keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments."

32. Thus, rules provide for consideration of prices of the product in an market economy third country or prices from such third countries to other countries including India for determination of normal value in case of non market economy country. However, in this subject case, it is noted that since the volume of imports of subject goods into India from appropriate market economy third country is quite low and the even the prices in that country (European Union) could be impacted due to Chinese dumping, the Authority considers it appropriate to determine normal value on "any other reasonable basis", as was determined at the stage of preliminary findings. Accordingly, the ex-works Normal Value of the product under consideration for all these exporters from China PR is determined on the basis of facts available. The Normal Value has been constructed taking into account available international price of major inputs. Conversion cost and SGA expenses of the domestic industry have been adopted for determination of the normal value. After adding a reasonable profit margin of 5 %, constructed normal value for the subject goods, for all

Producers/exporters from China PR have been worked out. The normal value thus determined comes to US\$ 12.55 per Kg.

F 3. Determination of Export price —

33. The Authority has determined the export price for other non responding Producers/exporters as per the facts available on record. The Authority has therefore determined the export price for all the non responding exporters/producers from China PR based on facts available on record. For the responding exporter whose export prices and Price adjustments have been verified, the export price has been determined after taking into account their prices to India given in their appendix wise information and all adjustments claimed by them and verified by the Authority. For other Producers/exporters, the CIF Export price has been adjusted for ocean freight, marine insurance, commission, inland freight, port expenses and bank commission, as per the information provided by these cooperating exporters.

F 4. Determination of dumping margin —

34. Considering the Normal value and the Export price as determined above, the dumping margin works out as follows:

	unit	Yinghai	Others
Normal value	US \$/Kg	****	****
Net export price	US \$/Kg	****	****
Dumping margin	US \$/Kg	****	****
Dumping margin	%	9.23	28.14

35. The Authority notes that the dumping margin from China PR is significant and more than the de-minimis limits prescribed.

G - METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF CAUSAL LINKS

G.1 Examination of Injury and Causal Link:-

36. Rule 11 of Anti-Dumping Rules read with Annexure-II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, "taking into account all relevant facts, including the volume of the dumped imports, their effect on prices in the domestic market for the like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles." In considering the effect of

the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India or whether the effect of such imports are otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

37. The Authority notes that the application for imposition of Anti-Dumping Duty has been filed by M/s. Atlas Fine Chemicals Ltd, who commands a major proportion of total production of subject goods in India. In terms of Rule 2(b) of the Rules it has been treated as the domestic industry for the purpose of this investigation.

38. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. are required to be considered in accordance with Annexure II of the Rules. All economic parameters affecting the Domestic Industry as indicated above such as production, capacity utilization sales volume etc. are also required to be examined.

G.2. Views of the Domestic Industry:

39. The following are the views of domestic industry:-

- (i) Present petition is for imposition of Anti Dumping Duty against dumped imports of Coumarin from China PR in the Indian market. Dumping of the product in India is not a new phenomenon.
- (ii) With the advent of increasing imports the performance deteriorated in terms of domestic sales, production, capacity utilization, productivity, inventories, market share, profits, return on investments, cash flow, etc.
- (iii) The demand of the product in the country shows a positive trend whereas sales of the domestic industry at the same time show a negative trend. As a result, market share of the domestic industry declined.
- (iv) Volume of dumped imports from China PR has increased very significantly in absolute terms over the injury period.
- (v) Imports have increased significantly in relation to total imports, production and consumption in India.
- (vi) As a result of increase in imports in absolute term and relative to production and consumption, share of the domestic industry has declined.
- (vii) The export quantities of domestic industry shows continuous decrease indicating significant market share of dumped Chinese goods in the world markets.
- (viii) Weighted average import prices (after including basic customs duties) have been significantly below the net sales realization of the domestic industry, thus resulting in significant price undercutting.

- (ix) The dumped CIF export price shows a substantial reduction in the landed price of imports. This had direct adverse impact on the domestic industry. Reduction in the landed price of imports prevented the Indian Producers from effecting legitimate price increases.
- (x) The landed price of imports is significantly below the cost of production of the domestic industry. Imports have had significantly depressing effect on the prices of the domestic industry in the market.
- (xi) The production, capacity utilization and sales of the domestic industry have declined both in absolute and relative term.
- (xii) The performance of the domestic industry for product under consideration has deteriorated over the injury period and since 2006-07, the domestic industry is in significant losses.
- (xiii) Market share of the domestic industry has severely declined whereas that of imports has materially increased.
- (xiv) Productivity of the domestic industry declined with decline in production.
- (xv) ROI (NFA Basis) of the domestic industry has significantly deteriorated over the injury period. Similar is the situation of cash profit as well. This clearly shows the price depression and suppression effect of dumped imports from China PR that has resulted in significant losses to the domestic industry.
- (xvi) There has been a considerable increase in the level of inventories indicating that even at the capacity utilization of 43% during the investigation period, the domestic industry is unable to dispose off its production.
- (xvii) Growth in terms of sales, production, capacity utilization, cash profits, profits, return on investment has been negative.
- (xviii) The dumping margin from subject country is not only more than de-minimus but also very substantial. The impact of dumping on the domestic industry is significant and is gradually intensifying.

G.3 Views of the Exporters, importers and other interested parties

40. None of the other interested parties have made any submissions with regard to injury to the domestic industry and causal link thereof.

G.4 Examination by the Authority

41. The Authority has taken note of submissions made by the interested parties. Annexure II of AD Rules provides for objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in domestic market for the like articles; and (b) the consequent impact on domestic producers of such products. While examining the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to price effect of dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increase which would have otherwise occurred to a significant degree.

42. As regards the impact of dumped imports on the domestic industry, para (iv) of Annexure-II of AD Rules states as under:-

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."

The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and arguments of the interested parties.

G.5 Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic industry

43. Transaction-wise information of imports of subject goods was called from DGCI&S and the same was compared with the information provided by the IBIS (secondary sources). It was claimed by the domestic industry along with evidence that the subject goods had been reported in more than one tariff head and hence information from IBIS should be taken into account as it has reported higher volumes. After the detailed examination, it was decided to take into account the information from IBIS as it had reported higher volumes of the subject goods.

Import, Demand, Volumes and Market share:-

44. Demand of the product in the Country has been assessed as the sum of domestic sales of the domestic producers and imports from all sources.

Import particulars

45. It is noted that imports of the subject goods from subject country has increased significantly in absolute terms during the injury period. Further, the market share of subject country has increased significantly during the same period as shown in the table.

Particulars	Units	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Imports	MT	188.25	194.10	219.50	251.36
China PR	MT	149.85	158.65	204.05	219.45
Other Countries	MT	38.40	35.45	15.45	31.91
Market share in Imports	%				
China	%	79.60	81.74	92.96	87.31

Other Countries	%	20.40	18.26	7.04	12.69
-----------------	---	-------	-------	------	-------

Demand particulars

46. Demand for the product under consideration increased throughout the injury period and has grown by about 17% during the injury period. Further, imports of the subject goods from the subject country has increased in absolute terms during the same period. It is also noted that increase in dumped imports was more than the increase in demand.

Particulars	Units	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Imports total	MT	188.25	194.10	219.50	251.36
Sales of Domestic Industry	MT	62.97	63.37	58.93	42.19
Demand	MT	251.22	257.47	278.43	293.55
Index demand		100	102.49	110.83	116.85

Imports in relation to various parameters

47. It is also noted that dumped imports of the product under consideration increased in relation to production of the like product in India during the injury period. Further this has also increased in relation to consumption in India as well as sales of the domestic industry.

Particulars	Units	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Dumped imports from subject country in relation to					
Share in total imports	%	79.60	81.74	92.96	87.31
Share in Demand	%	59.65	61.62	73.29	74.76
Production in India	%	57.85	90.54	112.40	128.91
Sales of Petitioner	%	237.97	250.34	346.25	520.16

Market share of domestic industry

48. As a result of this increase of imports of subject goods from subject country, the market share of the domestic industry declined during the injury period.

Particulars	Units	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Market share in Demand	%				
Import from- China	%	59.65	61.62	73.29	74.76
Import from Other Countries	%	15.29	13.77	5.55	10.87
Sales of Domestic Industry	%	25.07	24.61	21.17	14.37

49. It is thus noted that demand for the product under consideration increased throughout the injury period and has grown by about 17% during the injury period. Further, imports of the subject goods from subject country have increased in absolute terms during the same period. It is noted that increase in dumped imports was more than the increase in demand. It is also noted that imports increased in relation to imports of the product under consideration in India from various sources in general and from the subject country in particular. Further, imports of the product under consideration increased in relation to production of the like product in India. As a result of this increase of subject goods from subject country, the market share of the domestic industry declined during the injury period. Thus, it is determined that the domestic industry has suffered significantly on account of volume effect of dumped imports from subject country.

Price effect of imports

50. With regard to the effect of the dumped imports on prices, it has been examined whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. A comparison for product concerned was made between the landed value of exported product and the average selling price of the domestic industry for domestic market net of all rebates and taxes, at the same level of trade. The prices of the domestic industry were determined at the ex factory level. The CIF prices of the subject country concerned were adjusted for post importation applicable duties. This comparison showed that during the period of investigation, the subject goods originating in China PR were sold in the Indian market at prices which were lower than the domestic industry's prices. It is thus seen that imports were undercutting the domestic prices though the extent of undercutting is not considered significant during the POI.

Particulars	Units	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Landed Value	Rs./Kg	****	****	****	****
Net sales realization	Rs./Kg	****	****	****	****
Indexed	Trend	100	94	102	117
Price Undercutting	Rs./Kg	****	****	****	****
Indexed	Trend	100	23	88	38
Price Undercutting	%	****	****	****	****
Price Undercutting	% Range	10 to 15	1 to 5	10 to 15	1 to 5

51. The Authority has also examined price depression, price suppression and price underselling if any, suffered by the domestic industry on account of dumped imports from

subject country. After examination, it is determined that the landed value of imports from subject country is significantly below the cost of production and non-injurious price of the domestic industry. The imports are thus resulting in price underselling being faced by the domestic industry. It is further noted that selling prices of the domestic industry have increased during the injury period but this increase is much less than increase in the cost of production of domestic like product sold by the domestic industry resulting in price suppression.

	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Cost of Sales	Rs./kg	****	****	****	***
Trend	Index	100	101	110	128
Domestic selling price	Rs./kg	****	****	****	***
Trend	Index	100	94	102	117

52. It is thus determined that whereas the costs increased by 28%, the domestic industry could increase its selling prices only by 17%. It is thus noted that the dumped imports from subject country are preventing the domestic industry from effecting legitimate price increases. It is thus concluded that the effect of dumped imports on the domestic industry has been adverse and significant.

Economic parameters of the domestic industry

53. Annexure II to the AD Rules requires that a determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of like product. The Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. An examination of performance of the domestic industry reveals that the domestic industry has suffered material injury. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed below.

(i) Production

54. It is noted that production of the domestic industry declined over the injury period. It is further noted that whereas demand for the product increased by 17%, production declined by about 35% during the injury period.

	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Capacity	MT	400	400	400	400

Production	MT	259	175	182	170
Trend	Indexed	100	68	70	66
Demand	MT	251	257	278	294
Trend	Indexed	100	102	111	117
Production in % of demand	%	103.11	68.06	65.20	57.99

(ii) Capacity & capacity utilization

55. Capacity & capacity utilization of the domestic industry moved as shown in the table below. It is seen that capacity installed by the company during the injury period remained the same. It is also noted that petitioner is using the production capacities dedicatedly for the product under consideration. Whereas demand for the product increased during the injury period, decline in production led to decline in capacity utilization. Decline in capacity utilization is in tandem with the decline in production. Thus, whereas demand for the product increased by about 17%, capacity utilization declined by 34%.

	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Capacity	MT	400	400	400	400
Production	MT	259	175	182	170
Capacity Utilization	%	64.76	43.81	45.38	42.56
Trend	Indexed	100	68	70	66
Demand	MT	251	257	278	294
Trend	Indexed	100	102	111	117

(iii) Domestic sales

56. It is noted that domestic sales of the domestic industry declined significantly over the injury period. It is also noted that petitioner does not have any captive consumption. However, petitioner does have significant exports. The impact of dumping was therefore examined only with reference to domestic sales.

	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Domestic Sales	MT	63	63	59	42
Trend	Indexed	100	100	94	67
Demand	MT	251	257	278	294
% of sales in demand	%	25.07	24.61	21.17	14.37
Change in					

Domestic sales	MT		0	-4	-17
Demand	MT		6	21	16

(iv) Profitability

57. The profitability of the domestic industry in respect of domestic like product has been examined only in respect of domestic sales. It is seen that profitability of the domestic industry for the subject goods has significantly deteriorated over the injury period. The domestic industry is in significant losses since 2006-07. Further, the losses increased over the injury period.

	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Cost of Sales	Rs./Kg	****	****	****	****
Indexed	Trend	100	101	110	128
Net Sales Realization	Rs./Kg	****	****	****	****
Indexed	Trend	100	94	102	117
Profit/Loss	Rs./Kg	****	****	****	****
Indexed	Trend	100	(76)	(93)	(152)
Profit before tax	Rs. Lacs	****	****	****	****
Indexed	Trend	100	(77)	(87)	(102)
Profit before interest	Rs. Lacs	****	****	****	****
Indexed	Trend	100	(77)	(87)	(102)

(v) Employment and Wages

58. Employment with the domestic industry and wages paid were as follows

Productivity	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Employment	Nos.	****	****	****	****
Indexed	Trend	100	84	72	67
Wages	Rs. Lacs	****	****	****	****
Indexed	Trend	100	104	109	155

It is thus noted that employment has been adversely affected due to decline in domestic sales, production and continuing low capacity utilization.

(vi) Productivity

59. Productivity of the domestic industry was as follows

Productivity	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Productivity per employee	MT	4.54	3.65	4.43	4.48
Indexed	Trend	100	80	97	99

It is noted that productivity of the domestic industry was almost at similar levels during the injury period. Thus, this parameter is not considered relevant for assessing the injury of the domestic industry.

(vii) Return on investments and cash flow

60. The return on investment has been determined considering profit before interest and capital employed in the product. Impact on cash flow has been determined considering profit before depreciation but after interest cost. It is noted that return on capital employed and cash profits have significantly deteriorated over the injury period. It is also noted that the performance of the domestic industry with regard to profits and return on capital employed & cash profits moved in same direction and deteriorated adversely during the injury period.

	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	POI
ROCE	%	****	****	****	****
Indexed	Trend	100	(28)	(36)	(58)
Cash Profit	Rs.Lacs	****	****	****	****
Indexed	Trend	100	(47)	(50)	(71)

(viii) Inventories

61. There is significant increase in the level of inventories since 2007-07 to the POI though it has declined at an absolute level during the injury period. However, inventories equal to number of days sales have increased during the injury period. Further, the domestic industry has argued that in spite of 40% capacity utilization during the investigation period, the domestic industry was not able to sell the subject goods completely. The domestic industry further argued that despite existing level of demand where the domestic industry would have easily reached 100% plant utilization, imports at dumped prices have adversely impacted the production and inventory level with the domestic industry.

	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	POI

Inventories	MT	15	12	5	-12
Inventories equal to no. of days sales	Days	21	22	10	27

(ix) Growth

62. Information with respect to growth in various parameters is given in the table below. It is seen that growth in terms of both volume & price parameters is negative.

Particulars	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Growth					
Production	%		(32.35)	3.60	(6.22)
Domestic sales	%		0.64	(7.01)	(28.41)
Inventory	%		(23.12)	(57.54)	139.24
Selling Price/KG	%		(5.64)	8.14	14.34
Cost/KG	%		1.39	8.58	16.05
ROI	%		(13.51)	(0.80)	(2.32)

(ix) Ability to raise capital investments

63. The domestic industry has argued that given the current state of affairs where running the product is consistently not performing well because of persistent dumping over last more than five years, substantial fresh investments cannot even be imagined. It is noted that the product under consideration forms a very significant part of the company's overall operations. The Authority holds that continued dumping of the product and financial losses in the product are bound to adversely impact the ability of the domestic industry to raise capital investments.

(x) Level of dumping & dumping margin

64. The dumping margin established hereinabove in respect of responding exporters and non cooperative exporters are quite significant and above the de minimus level.

(xi) Lost sales

65. The domestic industry has submitted various instances of the orders lost by it from various customers who have cited availability of Chinese subject goods at lesser prices.

H. CAUSAL LINK

66. The Authority has examined whether other factors listed under the AD Rules could have contributed to injury to the domestic industry. It was found as follows.

(i) Imports from third countries.

67. The Authority has collected the transaction-wise imports data of the subject. From the information available on record, the Authority notes that there are no significant imports of subject goods from countries other than subject countries.

(ii) Contraction in demand

68. The Authority notes that the demand for the subject goods has shown significant improvement during the injury period. Possible contraction in demand could not have caused injury to the domestic industry.

(iii) Changes in the pattern of consumption

69. The pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change, nor there is any quantified allegation in this regard. The investigation so far has not shown existence of alternate competing products and possible injury being caused by such alternate products.

(iv) Trade Restrictive practices of and competition between foreign and domestic producers

70. The Authority notes that there is a single market for the subject goods where dumped imports from China PR compete directly with the subject goods supplied by the domestic industry. It is noted that the imported subject goods and domestically produced goods are like articles and are used for similar applications/end uses. There is no evidence of trade restrictive practices of and competition between the foreign producers and domestic producers causing injury to the domestic industry.

(v) Developments in Technology

71. There is no allegation of developments in technology, nor the investigation so far has shown that possible injury to the domestic industry could have been caused by developments in technology.

(vi) Export performance

72. The petitioner has significant exports. However, the Authority has considered only domestic operations and domestic profitability. Further, it has been determined that per unit exports price during the POI was 17% higher than the domestic selling price.

(vii) Productivity of the Domestic Industry

73. There is no material change in productivity of the domestic industry. Possible decline in productivity cannot be the reason for the established injury to the domestic industry.

Level of dumping margin and injury margin

74. The level of dumping margins and injury margins as determined are mentioned below. It is thus noted that these levels are considered significant.

	Unit	Yinghai	Others
Dumping Margin	US\$/Kg	****	****
Dumping Margin	%	9.23	28.14
NIP	Rs./Kg	****	****
Exchange Rate	Rs./US\$	43.46	43.46
NIP	US\$/Kg	****	****
Injury Margin	US\$/Kg	****	****
Injury Margin	%	****	****
Injury Margin	% (Range)	4-8	20-25

I. Conclusion on Injury and causation

75. There has been a significant increase in the volume of dumped imports from China PR at the absolute level and also in relation to demand of subject goods in India. It is noted that the market share of the dumped imports has increased and that of domestic industry has declined. The dumping margin from subject country has been determined and is considered significant. Further, production, sales volumes and capacity utilization of the domestic industry have declined and inventories with the domestic industry have increased. Thus, the dumped imports from subject country show adverse volume effect. It is also noted that the dumped imports were undercutting the prices of the domestic industry in the market though the undercutting margin is not significant. It could be assumed that the domestic industry was trying to match its selling prices close to the landed price of imports of subject goods from China PR. Further, it has been noted that, the domestic industry has not been able to increase its prices in proportion to the increase in the cost of production and the domestic industry has been forced to sell the product at prices much below non injurious price. Thus, as a result of price underselling and price suppression, the domestic industry has suffered significant decline in profits, return on investments and cash profits. Thus, it is determined that the dumped imports have had significant adverse price effect in terms of price underselling and price suppression which in turn lead to significant deterioration in profits, return on investments and cash profits.

76. As per the material available on record, the Authority holds that various parameters relating to domestic industry collectively and cumulatively establish that the domestic industry has suffered material injury caused by the dumped imports from the subject country.

J. Conclusions:

77. After examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority holds that:

- (a) The product under consideration has been exported to India from the subject country below Normal values.
- (b) The domestic industry has suffered material injury on account of subject imports from subject country.
- (c) The material injury has been caused by the dumped imports of subject goods from the subject country.

K. Indian industry's interest & other issues

78. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way; and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

79. It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods.

L. Recommendations

80. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted the investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the Act and the AD Rules and having established definitively positive dumping margins concerning imports of the subject goods originating in or exported from the subject country and as well as material injury and threat thereof to the domestic industry caused by such dumped imports; the Authority is of the view that imposition of definitive duty is required to offset the dumping and 'injury' in the instant matter. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend imposition of definitive anti-dumping duties concerning imports of the subject goods from the subject country in the form and manner described hereunder.

Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the antidumping duty equal to the difference between the amount indicated in Col 8 of the table below and the landed value is recommended to be imposed on all imports of subject goods originating in or exported from China PR.

Duty Table

Sl. No	Sub- headi- ng	Description of goods	Count- ry of origin	Count- ry of export	Producer	Exporter	Amo- unt	Unit of meas- urem- ent	Curr- e- ncy
-1	-2	-3	-4	-5	-6	-7	-8	-9	-10
1	2932. 21	Coumarin of all types	China PR	China PR	Yinghai (Cangzh- ou) Aroma chemical Co., Ltd.	Yinghai (Cangzhou) Aroma chemical Co., Ltd.	14.02	Kg.	US\$
2	- do -	- do -	China PR	China PR	Any combination of producer and exporter other than at S. No. 1 above		14.02	Kg.	US\$
3	- do -	- do -	China PR	Any countr- y other than China PR	Any	Any	14.02	Kg.	US\$
4	- do -	- do -	Any countr- y	China PR	Any	Any	14.02	Kg.	US\$

			other than China PR						
--	--	--	------------------------------	--	--	--	--	--	--

Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

81. Subject to the above, the Authority confirms the preliminary findings dated 29th January, 2010.

82. An appeal against the findings after its acceptance by the Central Government shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal (CESTAT) in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and Customs Tariff Rules, 1995.

P. K. CHAUDHERY, Designated Authority